क्रमशः

वार्षिक अंक अंक : 63, निःशुल्क

दूरभाष : नवांकुर - 221066, 223399 (मुख्य भवन),
220769 (विस्तार भवन), डॉल्फिन - 222644
email : nvpbsd_2007@rediffmail.com,
www.navankurvidyapeeth.com

नवांकुर विद्यापीठ, गंजबासौदा

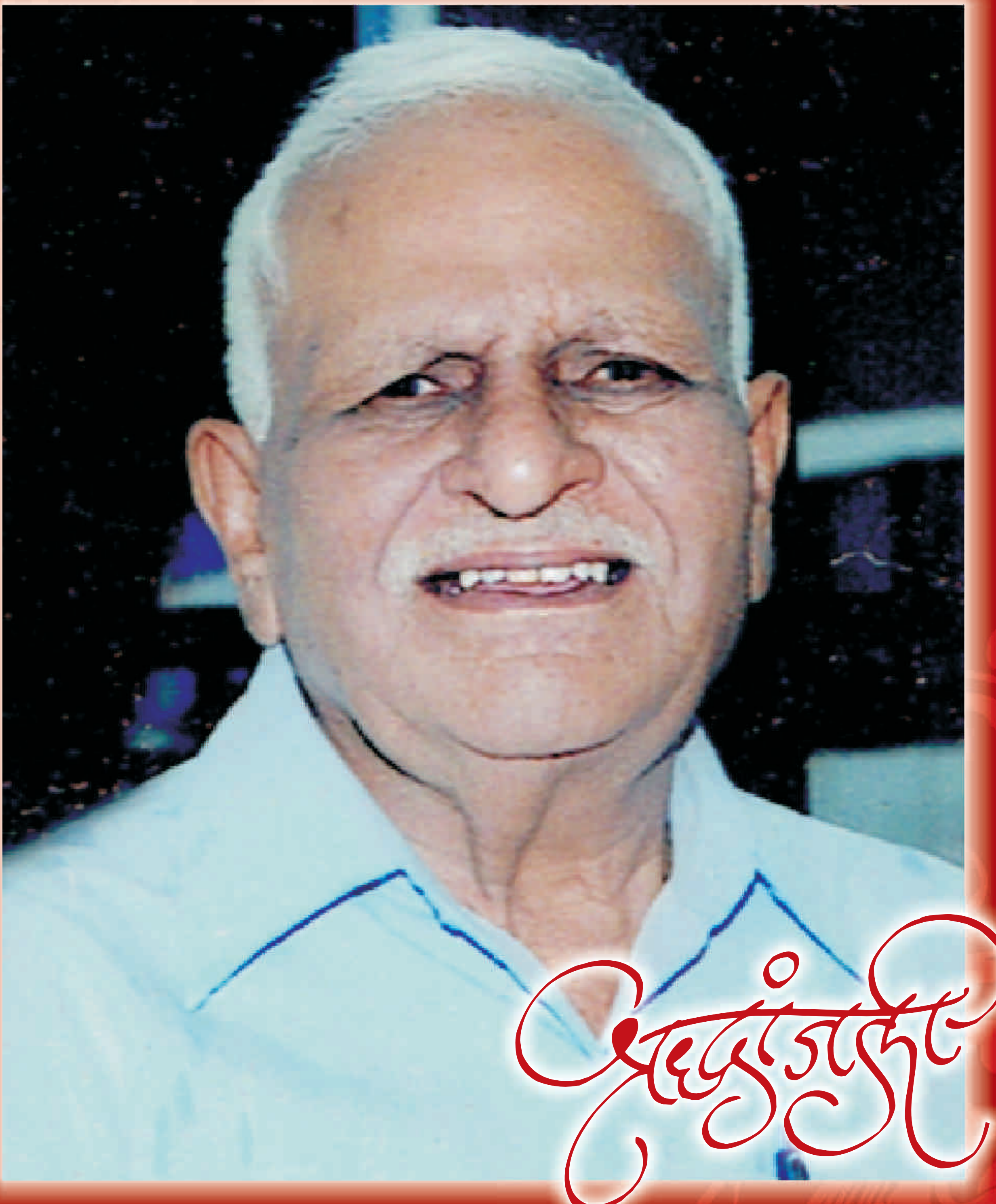

नवांकुर के शिल्पकार, हमारे पितृपुरुष – श्रद्धेय स्व. श्री विजय शिरढोणकर जी
देहावसान – दि. 6 जुलाई 2016

२२ अक्टूबर
भारत जन ज्ञान-विज्ञान
"92"
जिला विदिशा (म.प्र.)
नवांकुर विद्यापीठ

सम्पादकीय

प्रिय विद्यार्थियों एवं पाठको,

हमारे प्रेरणास्रोत, मार्गदर्शक, नवांकुर के बच्चों के परमप्रिय आदरणीय डॉ. साहब का विगत दिनों देहावसान हो गया। यह बात न जाने सच होते हुए भी सच नहीं लगती, क्योंकि जब भी आँखें बन्द करके डॉ. साहब के बारे में सोचता हूँ, एस सादा लिबास पहने, मधुर मुस्कान से मुखरित व्यक्तित्व मुखर होने लगता है। उनकी मैहजबानी हर शब्द प्रेरणा बनकर हमें कर्त्तव्यपरायणता का पाठ पढ़ाने लगता है। नवांकुर की प्रार्थना–सभा के सामाजिक गीतों से लेकर, हर शिक्षक की प्रेरणा में डॉक्टर साहब की उपस्थिति दिग्दर्शित होती है। प्राचार्य महोदय से लेकर हर वरिष्ठ शिक्षक की जुबान पर डॉक्टर साहब के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालती कोई–न–कोई बात प्रत्यक्ष दिग्दर्शन कराती है। फिर कैसे कहा जा सकता है कि डॉक्टर साहब हमारे बीच नहीं रहे।

कोई नवाचार की बात हो, परम्पराओं से हटकर कुछ नया करने का प्रत्येक संकल्प हमें डॉक्टर साहब के विचारों के साथ जोड़ता है। पेशे से डॉक्टर होने के बावजूद डॉक्टर साहब कुछ ऐसा करना चाहते थे जो समाज को नवीन आयाम दे। लोग उन्हें नहीं, अनेक कार्यों को याद रखें, इसी कारण से यही आग लिये वे नवांकुर रूपी एक संस्था को अपने सपनों का नवांकुर बनाने में जुट गये और आज उनके सपनों का यह नवांकुर कईयों के भविष्य– निर्माण के स्वप्नों को साकार करने में लगा है, उनको याद करते हुए मुझे किसी कवि की कविता कुछ पंक्तियाँ याद आती हैं कि :–

न संघर्ष, न तकलीफ, तो क्या मजा है, जीने में।
बड़े–बड़े तूफाँ थम जाते, जब आग लगी हो सीने में।

उनकी इन प्रेरणा को साकार रूप देने उनके सामाजिक कार्यों में कदम से कदम मिलाकर चलने वालों में बासौदा की कई महान् शख्सियतों के नाम हैं। हमारे इस अंक में हमने उनमें से कुछ के लेखों के माध्यम से डॉक्टर साहब को याद करने का प्रयास किया है। क्रमशः के इस अंक को हम 'स्मृति अंक' के रुप में प्रकाशित करने जा रहे हैं। आदरणीय डॉक्टर साहब को मेरा सादर नमन। उनका प्रकाश रूपी व्यक्तित्व हमें हमेशा इसी तरह रौशनी प्रदान करता रहेगा, इन शब्दों के साथ मैं आपका क्रमशः के इस स्मृति अंक में स्वागत करता हूँ कि –

इक पतंगे ने अपने, रख्श–ए–आखिर में कहा –
रौशनी के साथ रहिये, रौशनी बन जाइये।

आपका
सन्दीप रावत
सम्पादक–क्रमशः

श्रद्धांजलि

यह अंक
समर्पित है
नवांकुर के शिल्पकार
हमारे पितृपुरुष
श्रद्धेय स्व. श्री विजय शिरढोणकर जी
को।
जो दि. 6 जुलाई 2016
को चिरनिद्रा में लीन हो गये।

आईये हम सब उनको
याद करें
और
उनके आदर्शों पर चलने
का संकल्प लें

भूली बिसरी यादें

नवांकुर की कहानी डॉ. साहब की जुबानी

बीते दिनों एक गीत बहुत लोकप्रिय हुआ था, ''वो जब याद आये, बहुत याद आये......'' यादों का ऐसा ही है, यादें जब आती हैं, तो प्याज के छिलकों की तरह एक–के–बाद–एक निकलती ही चली जाती हैं।

बीते दिनों को जब याद करता हूँ, तो आश्चर्य होता है, कैसे याद रह जाते हैं कुछ क्षण, कुछ व्यक्ति। हम तो समझे थे कि हम भूल गये हैं उनको, लेकिन नहीं, मनुष्य कुछ नहीं भूलता, अच्छा भी नहीं भूलता, बुरा भी नहीं। बच्चन जी ने कहा है – ''क्या भूलूँ, क्या याद करूँ''।

मुझे याद आ रहा है कि, आपातकाल का स्याह अंधेरा, चारों तरफ चुप्पी, एक सन्नाटा। सत्ता के कोड़े सटासट लोकतन्त्र की पीठ छीले दे रहे थे, अनुभव नहीं था हम लोगों को ऐसी तानाशाही का, सन् '47 के पहले अंग्रेजों की तानाशाही के किस्से सुने भर थे, भुगते नहीं थे। बिनोबा इसे 'अनुशासन पर्व' कहकर ताली बजा रहे थे, बिना हड्डी के केंचुऐ तारीफ कर रहे थे–देखो गाड़ियाँ समय पर आ रही हैं; दफ्तर समय पर लग रहे हैं। 'वाह! सर्दी भगाने के लिये घर को आग लगा दो और ताली बजाओ कि देखो सर्दी दूर हो गई।''

उसी समय मुझे एक युवक मिला, उम्र थी 20–22 वर्ष, नाम था पं. रमेश व्यास 'शास्त्री', राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का वफादार कार्यर्ता, वहीं संस्कार, वही सभ्यता, साईकिल पर आ रहा हो तो दूर से ही अदब के साथ, उतरकर प्रणाम करता एक मासूम चेहरा, एक विद्यालय प्रारम्भ किया था, चूँकि मुझे शिक्षा में रुचि थी, इसीलिये मैं भी इस विद्यालय के साथ जुड़ गया था, किन्तु इस विद्यालय के साथ एक दिक्कत थी, न तो यह पंजीकृत था, न ही शासन से मान्यता प्राप्त करने में उन्हें रुचि थी, मैं किसी अवैधानिक संस्था से जुड़ नहीं सकता था, सो रमेश व्यास को मैंने साफतौर पर बता दिया कि अगर आप संस्था को वैधानिक नहीं बनायेंगे, तो मैं आपसे जुड़ने में असमर्थ रहूँगा।

देश की गुप्तचर संस्था ने इन्दिरा गाँधी को सूचना दी कि माहौल अच्छा है, चुनाव करवा लें, जीत पक्की है, जनता के पैसों के दम पर चलने वाले तन्त्र ने शायद पहली बार, अनजाने ही सही, जनता का भला किया। सूचना के आधार पर आपातकाल समाप्त कर दिया गया, चुनाव हो गये और इन्दिरा जी चारों खाने चित्त हो गईं।

रेडियो पर चुनाव परिणाम आने चालू हो गये, भारत की जनता की लोकतन्त्र के प्रति अगाध प्रतिबद्धता का अद्भुत प्रदर्शन देखने को मिला। चाहे शहर हो या गाँव या धुर आदिवासी इलाके, सर्वत्र काँग्रेस हार रही थी।

शाम को 8–10 युवकों की टोली ताली के थाप पर नारे लगाती निकली – ''इन्दिरा हारीं, संजय हारे, विद्या हारे–मेहता हारे'' तालियों की वह थाप आज भी कानों में गूंज रही है, इस टोली का नेतृत्व जो युवक कर रहा था, उसे मैंने देखा था, हाथ से गन्ने की चरखी चलाते, मैं अक्सर उसकी चरखी पर गन्ने का रस पीने जाता था। निम्न मध्यम वर्ग के इस युवक में गजब का आकर्षण था, गरीब किन्तु ईमानदार पटवारी का सबसे बड़ा बेटा था वह। अपने परिवार के भरण–पोषण में मदद करने वाले, बेहद परिश्रमी, लेकिन अति महत्वाकांक्षी उस युवक का नाम था – अनिल यादव।

रमेश व्यास ने उस अवैधानिक संस्था से नाता तोड़ने का मन बना लिया था। एक नई संस्था गठित की गई, **''क्रियाशील प्रगति परिषद्''**। सन् 1977 में इस संस्था का पंजीकरण हो गया, इसी संस्था के माध्यम से आगे 1978 में रमेश व्यास ने एक विद्यालय प्रारम्भ किया – **''नवांकुर विद्यापीठ''**। तब तक मैं मात्र एक साधारण सदस्य था, लेकिन रमेश व्यास से सम्बन्ध घनिष्ठ होते जा रहे थे।

1978 में ही राज्य में चुनाव हुये और जनसंघ की सरकार बनी, संघ की पार्श्वभूमि होने से रमेश व्यास का उत्साहित होना स्वाभाविक था, रमेश व्यास संघ और जनसंघ के लोगों को अपना समझते थे, उत्साह के अतिरेक मे रमेश व्यास ने 'अपनों' को परिषद् में महत्त्वपूर्ण पद दे दिए। बात–बात में मैंने रमेश व्यास को चेताया कि यह गलती मत करो, शिक्षण संस्था को राजनीतिक रंग में मत रंगो, परिणाम घातक होंगे, लेकिन संघ से अपने रिश्ते के चलते उन्होंने मेरी चेतावनी को नजरअंदाज कर दिया।

जिसकी आशंका था, आखिर वो सच साबित हुई और बहुत जल्दी ही हो गई। परिषद् में बैठे 'अपनों' ने रमेश व्यास को ही परिषद् के बाहर कर दिया। **'नवांकुर विद्यापीठ'** के प्रधानाचार्य का पद भी उनसे छीन लिया गया। धरातल की कड़ची सच्चाईयों को नकारता हुआ, सपनों के आकाश में उन्मुक्त विचरण करने वाला युवक, परकटे पंछी की तरह धड़ाम से जमीन पर आ गिरा। मानसिक संत्रास के चरम–क्षणों में रमेश

व्यास फिर मेरी तरफ मुड़ गए।

मेरी नजर में प्राथमिक समस्या परिषद् नहीं थी, वरन् रमेश व्यास की रोजी–रोटी की थी। आखिर 'चम्पा' की नमकीन (दाल–सेव) खाकर कोई युवक कितने दिनों जिन्दा रह सकता था? मेरी बड़ी बेटी श्रद्धा उस समय 5 वर्ष की थी, उसे ट्यूशन की जरुरत नहीं थी, हम लोग वैसे भी ट्यूशन के पक्ष में नहीं थे, लेकिन स्वाभिमानी रमेश व्यास मुझसे आर्थिक मदद नहीं लेंगे, यह जानकर मैंने श्रद्धा को पढ़ाने के लिए उन्हें आमंत्रित किया। धीरे–धीरे कुछ और बच्चे भी जुड़ गये, उनकी दाल–रोटी की व्यवस्था कुछ हद तक हो गई थी।

दाल–रोटी की लड़ाई जीतने के बाद, रमेश व्यास को पुनः परिषद् की याद सताने लगी, वे लगातार मुझे कुछ करने का आग्रह करने लगे। मुझे राजनीति से कोई लगाव नहीं था और परिषद् राजनीतिज्ञों के चंगुल में फँसी थी। सो मैं टालता रहा। आखिर जब रमेश नहीं माने, तो मैंने उन्हें परिषद् का विधान मुझे दिखाने को कहा। प्रारम्भ में सरसरी तौर पर विधान पढ़ने के बाद मुझे कोई रास्ता नजर नहीं आया, परन्तु रमेश व्यास के बार–बार कहने के बाद मैंने रास्ता ढूँढ़ने का पक्का इरादा किया और दो–तीन बार गम्भीरता से विधान पढ़ते–पढ़ते मुझे एक चाबी हाथ लग गई (वो चाबी क्या थी, यह मैंने आज तक किसी को नहीं बताया, आज भी नहीं बताऊँगा) और इस चाबी के सहारे मैंने परिषद् के सारे दरवाजे खोल दिए तथा अप्रेल 1979 में रमेश व्यास को पुनः उनके स्थान पर बिठा दिया।

इस घटना के बाद रमेश व्यास मुझे अपने कृष्ण बताने लगे, अजीब बिडम्बना थी, मेरे और व्यास जी के सम्बन्ध में। वे मुझे अपना कृष्ण कहते रहे, लेकिन स्वयं –'अर्जुन' बनने से कतराते रहे।

परिषद्, व्यास जी को सौंपने के बाद में समझ रहा था कि समस्यायें खत्म हो गईं, लेकिन नहीं, असली समस्या तो आना थी। **'नवांकुर'** से भवन छीन लिया गया, शिक्षक छीने लिए गये और बच्चे भी छीन लिए गये। जिस–जिस को व्यास जी ने 'अपना' समझा उन सभी में **'नवांकुर'** की पीठ में छुरा घोंपने की मानो होड़ लग गई। 30 अप्रेल को जो छात्र संख्या 135 थी, वह 1 जुलाई को मात्र 22 रह गई। न भवन, न शिक्षक, न बच्चे। **'नवांकुर'** की भ्रूण हत्या का मानो सारा सामान तैयार कर दिया गया था।

यह मेरे लिए खुली चुनौती थी, व्यास जी हमेश की तरह हतबल, निराश हो गये थे, लेकिन चुनौती से भागना मेरे स्वभाव में नहीं है। मैं स्वयं मैदान में कूद पड़ा। धीरे–धीरे लोग जुड़ते गये, कारवां बनता गया। दुनिया के सामने एक चेहरा केवल डॉक्टर का साहब का था, लेकिन पीछे न जाने कितने हाथ इस चेहरे को थामे चल रहे थे, नरेन्द्र शर्मा, कर्नल चौरसिया, मुन्ना भैया, अनिल यादव, नीलकमल वर्मा, रमेश जैन, न जाने कितने–कितने हाथ चल रहे थे साथ।

बासौदा की प्रत्येक गली, प्रत्येक घर पर हमने दस्तक दी, मीराबाई के मन्दिर में पुनः **'नवांकुर'** का कक्षाएँ प्रारम्भ कर एक माह में छात्र संख्या 150 को पार कर गई।

अब हमारा लक्ष्य **'नवांकुर'** को पूर्णतया स्थापित करने का, बहुत ऊँचाई पर बैठाने का था।

'नवांकुर' को ऊँचाई तक ले जाने के निश्चय के बाद कुछ नये कार्यक्रम करने का निर्णय हुआ। 15 अगस्त पास आ रही थी। तय हुआ कि 15 अगस्त को एक झाँकी निकाली जाये, जो कि तब के हिसाब से एक नया कदम था। झाँकी तैयार करने का दायित्व कर्नल चौरसिया ने उठाया साथ में कलागुरु श्री भैयालाल जी नामदेव भी जुड़ गये। 14 तारीख थी, हमारे बरेठ रोड के नये घर में, जो कि बाद में 'रघुवंश भवन' हो गया, रातभर हम लोग जागते रहे और झाँकी तैयार करते रहे। भारत माता गुलामी की जंजीरों में जकड़ी दिख रहीं थी, सामने एक नन्हा बालक **'नवांकुर'** हाथ में हथियार लिए एक तरफ भारत माता के दुश्मनों को ललकार रहा था, दूसरी तरफ भारत माँ की जंजीरें काट रहा था। बहुत ही रोमांचक दृश्य था, भैयालाल जी ने अपनी पूरी कला ही मानो उसमें उड़ेल दी थी। ऐसी झाँकी मैंने न उसके पहले देखी थी न बाद में। झाँकी तैयार हो गई। अब प्रश्न था झाँकी के आगे जुलूस कैसे बने! **'नवांकुर'** के बच्चे तो उस समय पहली–दूसरी कक्षा के नन्हे–नन्हे बच्चे थे। वे पूरी शहर का चक्कर पैदल कैसे चलते, मेरे दिमाग में एक विचार आया और

कर्नल साहब से कहा 20 हाथठेलों की व्यवस्था हो सकती है? कर्नल साहब ने कहा होने को हो जायेगी लेकिन उनकी दिन भर की मजदूरी कौन देगा? विद्यालय के पास तो पैसे थे नहीं, फिर भी उन्होंने कहा एक ठेलेवाला कम–से–कम 25 रुपये तो लेगा। यह बहुत बड़ी रकम थी, मैंने कहा आप कम से कम कोशिश कीजिए बाकी मैं देखता हूँ। कर्नल साहब ने ठेले वाले एक–दो नेताओं को बुलवाया और काम की बात की, ठेले वालों ने हामी भर दी लेकिन वे 10/– रुपये से नीचे नहीं आ रहे थे, मैंने बच्चों की दुहाई दी आखिर वे 5/– रुपये प्रति ठेला पर राजी हो गये। 20 ठेले आ गये। उन्हें डंडियों से सजाया गया और 'नवांकुर' का चल समारोह, मय झाँकी, बैण्ड बाजे के सड़कों पर निकल पड़ा। मैंने पहली बार और अंतिम बार सड़क पर गीत गाये, 'इंसाफ की डगर पर ....'

15 अगस्त बीत गया, हमने एक और साहसिक कदम उठाने का निर्णय लिया, भ्रमण का। तय हुआ कि बच्चों को दिल्ली घुमाया जाये, इन्दिरा जी तब पुनः प्रधानमन्त्री बन गईं थीं। मैंने कहा हम बच्चों को इन्दिरा गाँधी से मिलवायेंगे। बस प्रधानमन्त्री कार्यालय को तत्काल पत्र लिखे गये। प्रधानमन्त्री जी ने 22 अक्टूबर 1982 को बच्चों से मिलने का दिन तय किया। यात्रा की तैयारियाँ प्रारम्भ हो गईं। सवाल फिर पैसों का था। हमने तय किया कि मात्र 55/– रुपये प्रत्येक बालक से लिये जायें। आज के लोगों को शायद विश्वास नहीं होगा कि मात्र 55/– रुपये में चार दिन की दिल्ली यात्रा हो सकती है। उस समय रिजर्वेशन की न तो परम्परा थी न **'नवांकुर'** के पास इतने पैसे थे कि बच्चों का रिजर्वेशन किया जाये। तय हुआ कि सभी बच्चों को दिन में यात्रा कराई जाये ताकि रास्ते के सारे दृश्यों का वे आनन्द ले सकें। उस समय एक जनता ट्रेन चला करती थी, जो कि सुबह 8 बजे बासौदा आती थी और रात में 9 बजे दिल्ली पहुँचाती थी। निश्चित हुआ कि 20 तारीख को इसी ट्रेन से चला जाये। बच्चों के नाम आने चालू हो गये, कुल 48 बच्चे सभी 7–8 वर्ष के, दिल्ली के लिए निकल पड़े। मैं रहने और खाने–पीने की व्यवस्था देखने के लिये 18 तारीख को ही दिल्ली रवाना हो गया। बच्चों के साथ रह गये कर्नल साहब और व्यास जी तथा वे शिक्षक जो स्वयं भी पहली बार इतनी दूर की यात्रा कर रहे थे। इसलिए वे रोमांचित भी थे और सहमे से भी।

20 तारीख की रात, मैं दिल्ली प्लेटफार्म पर ट्रेन का इंतजार कर रहा था, ट्रेन रात में करीब 10.30 बजे दिल्ली पहुँची। मैं उत्साह से बच्चों के डिब्बे के पास पहुँचा। कर्नल साहब सबसे पहले उतरे और भड़क पड़े–''डॉक्टर साहब आप अपनी धर्मशाला संभालिए, मैं अब साथ नहीं दे पाऊँगा।'' मैं उनके रौद्र रुप को देखकर एकबारगी स्तब्ध रह गया, किन्तु थोड़ी देर बाद मैंने उनसे पूछा–''क्या बात हो गई?'' वे फिर सख्त आवाज में बोले–''ये आपके टीचर बिल्कुल................ हैं।, ये .... खुद ही डरे–डरे हैं, ये क्या बच्चों को सम्हाल सकते हैं।'' मैंने व्यास जी को एक तरफ बुलाकर पूछा कि आखिर माजरा क्या है? तब व्यास जी ने कहा कि बच्चों और टीचर्स की वजह से बहुत कष्ट हुआ है यात्रा में।

22 तारीख की सुबह इन्दिरा जी के यहाँ पहुँचे। तब तक एक दुर्घटना में संजय गांधी की मृत्यु हो गई थी। इन्दिरा जी बेहद दुःखी थी, उन्होंने किसी से भी मिलने से इंकार कर दिया था। हम बच्चों को लेकर 10 जनपथ पहुँचे, पता लगा कि इन्दिरा जी ने सारे कार्यक्रम रद्द कर दिये हैं, भारी निराशा हुई। हमने हिम्मत नहीं हारी। वहाँ के अधिकारियों से निवेदन करते रहे, लेकिन वे टस–से–मस नहीं हुये। अचानक हमें श्री आर.के. धवन दिखाई दिये जो कि तब प्रधानमन्त्री भवन में ही तैनात थे। हमने धवन साहब को सारी बात बताई और निवेदन किया कि बस दो मिनिट के लिये ही सही इन्दिरा जी से बच्चों को मिलवा दीजिए, बच्चे इतनी दूर से आये हैं, उनकी इच्छा पूरी हो जायेगी। धवन साहब की कोशिश रंग लाई, थोड़ी देर बाद अन्दर से खबर आई, मैडम बच्चों से मिलने के लिए तैयार हो गई हैं। हम खुशी–खुशी अन्दर गये, इन्दिरा जी आईं। बच्चों से बातचीत का सिलसिला शुरु हुआ सो 2 मिनिट का समय 20 मिनिट तक खिंच गया। मानो इन्दिरा जी पुत्र वियोग के दुःख को बच्चों के साथ कुछ क्षण भुलाना चाह रहीं थी। बैठक के आखिर में इन्दिरा जी ने अचानक मेरी ओर मुड़कर पूछा – ''बच्चों को क्या चाहिए?'' मैंने विनम्रतापूर्वक कहा बस अब और कुछ नहीं चाहिए। ये बच्चे यहाँ कुछ माँगने नहीं आये हैं। वे केवल देखने आये हैं कि भारत के प्रधानमन्त्री कहाँ रहते हैं? कैसे रहते हैं? बस इसके अलावा हमें कुछ नहीं चाहिए। इन्दिरा जी बेहद प्रसन्न हो गईं और स्वयं ही फोटोग्राफर को बुलवाकर बच्चों के साथ फोटो खिंचवा लिया।

कठिनाई भरे उस दौर में जिस एक और व्यक्ति ने बेहद साथ दिया उनका नाम है नीलकमल वर्मा। हमेशा हँसता–मुस्कुराता, गोल मटोल बिहारी चेहरा, जब भी सामने आता, ढाँढस बढ़ाता महसूस होता। ''जिनके हृदय श्रीराम बसे.... ......'' वर्मा जी का का गाया यह भजन आज भी मेरे कानों में गूँजता है। अर्द्धवार्षिक परीक्षा का समय आ गया। हमने और वर्मा जी ने पेपर सेट किये, उनका अक्षर बहुत सुन्दर है, उन्होंने सभी पेपर अपने सुन्दर अक्षरों में लिखकर तैयार किये, परीक्षाएँ चालू हो गईं, जहाँ आज **'नवांकुर'** भवन खड़ा है। वहां बड़े–बड़े पेड़

थे, इन्हीं पेड़ों की छाया में बच्चे परीक्षा दे रहे थे, पर्यवेक्षक थे हम लोग।

धीरे–धीरे सपना आगे बढ़ रहा था, **'नवांकुर'** का काम और नाम जमने लगा था, किन्तु आर्थिक स्थिति बेहद खराब थी, इतनी खराब की एक एकाउन्टेन्ट रखने की गुन्जाईश नहीं थी। अतः हमने तय किया कि रोजाना जो फीस आये वह शाम को मेरे क्लीनिक पर मय रसीद कट्टे के पहुँचा दी जाये। रात में हमारे सचिव श्री एन.पी.शर्मा केशबुक लिखते और सिलक अपने साथ ले जाकर बैंक में जमा करते थे। रोज शाम को शिक्षक आते थे, पैसे देते थे, मैं गिनकर अपने पास रखता था। क्लिनिक पर आने वाले लोग रोज देखते थे और तभी से शायद यह गलतफहमी लोगों को हो गई कि डॉक्टर साहब तो रोज नोट गिनकर जेब में भर रहे हैं, यह गलतफहमी आज भी कुछ लोगों में बनी है। दिसम्बर के महीने में ही एक और साहसिक कदम हमने उठाया। तय हुआ कि **'नवांकुर'** का सांस्कृतिक कार्यक्रम किया जाये, वह भी मेला ग्राउण्ड में। आज भी, जबकि लोग अपने ही केम्पस में सांस्कृतिक कार्यक्रम करने से डरते हैं हमने 25 वर्ष पूर्व छोटे–छोटे बच्चों के साथ मेला ग्राउण्ड में मंच पर बच्चों का कार्यक्रम आयोजित कर डाला। तब भोपाल संभाग के डी.एस.ई.. जिन्हें अब संयुक्त संचालक कहा जाता है – श्री मिश्रा जी, हमारे परिचित थे, उन्हीं को मैंने मुख्य अतिथि के रुप में आमंत्रित किया। मिश्रा जी आये, कार्यक्रम हुआ, कार्यक्रम की अन्दर की व्यवस्था सम्हाली व्यास जी ने, बाहर कर्नल साहब थे और थी अनिल यादव की युवा टोली। बच्चों के कार्यक्रम ने उपस्थित हजारों माता–बहिनों को आल्हादित कर दिया। ''**नवांकुर** की कलगी में एक और तुर्रा जुड़ गया''।

26 जनवरी आ रही थी, हमने फिर तय किया हम गणतन्त्र दिवस महोत्सव मेला ग्राउण्ड में ही मनायेंगे और अकेले नहीं सभी संस्थाओं के बच्चों के साथ। पत्र लिखे गये, कार्यक्रम तय हुआ।

26 जनवरी की तैयारी शुरु हो गई। मेरे एक परिचित थे जिनकी बैण्ड की दुकान थी, मैंने उनसे कहा एक बड़ा ड्रम हमें चाहिए। 26 तारीख की तैयारी करना है। उसने कहा सुबह कोई शादी नहीं है आप ढोल ले जायें। मैं ढोल लेकर स्कूल पर पहुँचा, बच्चों को इकठ्ठा किया। गोल घेरा बनाया। बीच में मैं ढोल लेकर खड़ा था थाप दे रहा था, बच्चे मार्चपास्ट की प्रेक्टिस कर रहे थे, तभी एक सज्जन आये और कहा कि मैं ए.डी.आई. हूँ और आपके स्कूल का निरीक्षण करना है। मैंने प्रधानाचार्य से कहा अन्दर जाओ और साहब को निरीक्षण करवा दो। मैं बाहर ढोल बजा रहा था। अन्दर ए.डी.आई. साहब निरीक्षण कर रहे थे। निरीक्षण करते–करते अचानक उन्होंने पूछा–''ये डॉक्टर साहब कौन हैं? मुझे उनसे मिलना है।'' प्रधानाचार्य के यह कहने पर कि बाहर जो ढोल बजा रहे हैं, वही डॉक्टर साहब हैं, तो तत्काल बाहर निकल कर आ गये। मैं ढोल बजाता रहा, बच्चे प्रेक्टिस करते रहे और ए.डी.आई. साहब खामोश खड़े देखते रहे। आधे घण्टे बाद जब प्रेक्टिस खत्म हुई, तब उन्होंने आगे बढ़कर मुझसे हाथ मिलाया और प्रधानाचार्य से यह कहकर चले गये–''मुझे अब निरीक्षण नहीं करना है, आपकी संस्था बेहद अच्छी है।'' उन सज्जन का नाम था आर.एन.अग्रवाल, जिनका मेरा साथ आगे 25 वर्ष तक बना रहा।

25 तारीख की रात में एक बजे तक मैदान तैयार करने का काम हम लोग करते रहे। गुरुवर खटावकर और हरिश्चन्द्र जी दुबे रस्सी पकड़े थे, मैं खड़िया डाल रहा था, मैदान सजधज कर तैयार हो गया। हम रात में अपने–अपने घर जाकर सो गये और तभी मूसलाधार बारिश चालू हो गई। सुबह तक भारी बारिश हो चुकी थी। हम जल्दी–जल्दी मैदान में पहुँचे तो रोना आ गया। चारों तरफ कीचड़ ही कीचड़। सारी मेहनत पर पानी फिरता नजर आया, लेकिन असली मुसीबत तो आना बाकी थी। जल्दी–जल्दी फिर मैदान को तैयार करना चालू किया। राष्ट्रध्वज का पोल गाढ़कर खड़ा किया। बच्चे आना चालू हो गये। भारी कीचड़ के बीच बच्चे खड़े थे। तभी मुख्य अतिथि भी मेला प्रांगण में झण्डा वन्दन करने नीचे पहुँचे, रस्सी खींची और यह क्या.........। कीचड़ भरी जमीन में गाढ़ा गया पोल धड़ाम से जमीन पर आ गिरा। सभी स्तब्ध खड़े रहे और मेरा मन चीत्कार उठा, यह कौन–सा दण्ड मिल रहा है हमको। 26 जनवरी का पावन पर्व और ध्वज जमीन पर गिरने को था तभी खटावकर साहब दौड़े, हरिश्चन्द्र जी दौड़े और भी कई लोग दौड़े और झण्डे को अपने कन्धे पर उठाकर लहरा दिया।

सभी कुछ अच्छा चल रहा था, तभी एक घटना घट गई। व्यास जी को रेल्वे में नौकरी मिल गई। व्यास जी असमंजस में थे; क्या करें, क्या न करें। हमने उन्हें सलाह दी–''भविष्य को देखते हुए आपको नौकरी ज्वाइन कर लेना चाहिए। **'नवांकुर'** की चिन्ता छोड़िये, हम इसे देख लेंगे, बाद में ट्रांसफर लेकर इधर चले आना, आपको 'नवांकुर' साबुत मिलेगा।'' व्यास नवांकुर मेरी गोद में डालकर गये। मैंने उसे उठाकर सीने से लगा लिया, **'नवांकुर'** मेरा **'मानस–पुत्र'** बन गया।

– डॉ. विजय शिरढोणकर

(नवांकुर रजत जयंती के अवसर पर प्रकाशित क्रमशः से साभार)

यादें.....

डॉ. विजय : एक अक्षय ध्रुवतारा

ले. नीलकमल वर्मा

जी हाँ, इसमें कोई संशय नहीं, उस शख़्स के आज न होने पर भी ऐसा लग रहा है मुझे कि वह हमारे बीच, आसपास कहीं तो भी हैं। भाई शिरढोणकर के साथ बिताये पल मुझे पीछे सन् 1981 में ले जाते हैं।

महिदपुर से मेरा तबादला स्टेट बैंक ऑफ इन्दौर की गंजबासौदा शाखा में हो गया था। छोटा–सा कस्बा। मुझे मेरी बेटियों के लिए अच्छे स्कूल की तलाश थी। शाखा में मेरे साथ पदस्थ श्री नरेन्द्र शर्मा ने 'नवांकुर विद्यापीठ की चर्चा की और डॉ. विजय शिरढोणकर से मिलने को सुझाया। मैं उस फक्कड़ प्रेमी से उनके क्लीनिक पर मिला तब मुझे पता नहीं था कि यह शहर के दो दीवानों का मिलन साबित होगा। कई चर्चाएँ हुईं, मेरी बेटियों का दाखिला 'नवांकुर' में हो गया और मैं नवांकुर का .... बासौदा का। फिर तो मुलाकातों का सिलसिला दिन–ब–दिन बढ़ता ही गया और निःस्वार्थ दोस्ती पक्की होने लगी।

चर्चा में साहित्य, कला, संगीत, शिक्षा, नाट्य–शास्त्र और तमाम दुनिया भर की बातें। तब स्कूल अपनी बाल्यावस्था में, बरेठ रोड पर कवि बक्शी जी के फोटो स्टूडियो वाली गली में भीतर चलकर। बिल्डिंग के नाम पर झोपड़ीनुमा 2 कमरे एक छोटी सी खुली जगह। क्रियाशील प्रगति परिषद् द्वारा संचालित। तब पण्डित रमेशचन्द्र व्यास 'शास्त्री' जो बड़े आचार्यजी के रूप में ख्यात नवांकुर के संस्थापक, डॉ. शिरढोणकर अध्यक्ष, नरेन्द्र शर्मा सचिव, व्यासजी की अपनी कार्यशैली, विचारधारा आदि। डॉ. साहब से परिचर्चा का मूल विषय होता – स्कूल में पढ़ाई का स्तर कैसे उठाया जाये, अच्छा वेतन – अच्छे शिक्षक, आर्थिक हालात में सुधार – कैसे?जमकर चर्चा होती और निदान खोजा जाता। मेरी साफगोई ने शायद शिरढोणकर जी को मोहित किया होगा, उनके भीतर भी मैंने एक ज्वाला, एक उर्जा, कुछ कर गुजरने की तमन्ना देखी। स्कूल के विकास पर आयोजित बैठकों में विशेष सलाहकार के रूप में बुलाया जाने लगा।

उनसे जिस दिन शाम में मिलना नहीं होता, तो लगता कि दिन अधूरा रह गया। ऐसी ही एक शाम को व्यासजी ने एक रजिस्टर मेरे सामने रख दिया, जिसमें संचालक मण्डल के सदस्य रूप में मेरे मनोनयन प्रस्ताव पर मेरी सहमति मांगी जा रही थी। मैं थोड़ा हिचकिचाया, बैंक की कठिन सेवा करते हुए क्या समय दे पाना सम्भव होगा?मैंने अपना तर्क दिया कि मेरा 3 साल में ट्रांसफर हो जायेगा और मुझे शहर छोड़ जाना होगा, अन्ततः सभी के आग्रह को टालना मुश्किल हो गया।

मेरे खुले विचारों का प्रभाव डॉक्टर पर खूब रहा। वे सहज़ भाव से स्वीकारते हुए कहते कि हम दोनों के प्रगतिशील विचारों में काफी समानता है एवं संचालक मण्डल में अब वे अकेले नहीं और उनका हमदम, हमकदम साथ है। साथ ही एक चिन्ता भी खाये जाती कि भाई व्यासजी की भावनाओं का सम्मान करते हुए परिवर्तन की राह कैसे प्रशस्त हो और उनकी आस्था को ठेस न लगे। हमारा लक्ष्य अच्छी शिक्षा देकर एक योग्य पीढ़ी तैयार करना। मैंने विद्यालय की कार्यशैली में परिवर्तन लाने की मशाल जला दी। टिफिन टाइम में भोजन–मन्त्र का पाठ और पालक– सम्पर्क की व्यवस्था बदल दी। शिक्षक वर्ग ने राहत की साँस ली। तत्कालीन शिक्षिकाओं

के समूह ने मुझे बधाई दी। श्रीमती रामरति तिवारी और विदिशा से आने–जाने वाली दीवान मैडम मिलने आयीं। सम्भव है कि व्यासजी को कुछ कष्ट हुआ हो, पर आपसी प्रेम, सौहार्द्र एवं सहयोग की भावना में सब बह गया।

हमारे सपने बड़े–बड़े, पर इस छोटे कस्बा में हों कैसे?एक उभरता सवाल, धीरे–धीरे कारवाँ बनता गया, समर्थक बढ़ते गये। कर्नल चौरसिया साहब से परिचय हुआ, उन दोनों के साथ मिल–बैठ तिकड़ी बनी। पहला सवाल पैसो का प्रबन्ध कैसे?मैंने कई विकल्प रखे। मसलन विद्यालय का निर्माण–फण्ड, चन्दा उगाही, चैरिटी–शो आयोजित करना। शहर में सांस्कृतिक और रचनात्मक गतिविधियां भी हम आयोजित करने लगे। इसी क्रम में 'सूत्रधार' भोपाल से राजीव शुक्ला, नई दुनिया के उमेश त्रिवेदी का आगमन, 3–4 स्थलों पर नुक्कड़ नाटक का मंचन, नाटकों पर परिचर्चा, कवि सम्मेलन आदि। स्थानीय सिनेमा हॉल में स्व. शरद जोशी लिखित नाटक 'अन्धो का हाथी' मंचित किया गया। हमने घर–घर, दुकान–दुकान जाकर ड्रामा के टिकट बेचे। मेरे बैंक की कठिन नौकरी में जहाँ फ्रेंच लीव या तड़ी मारने की गुंजाईश नहीं, वहाँ भगवान ने शक्ति दी कि यह सफल प्रयोग हो गया। बासौदा के व्यापारी–वर्ग के वरिष्ठ अनुभवी लोगों ने बताया कि इस शहर में टिकट बेचकर ड्रामा दिखाने की कल्पना भी इतिहास रचने जैसी बात होगी, मुफ्तिया भीड़ चाहे जितनी जमा कर ली जाये। इस आयोजन से खर्च काटकर लगभग 5 हजार रुपए जमा हुए 'नवांकुर' के लिए, विद्यालय द्वारा पाँव पसारने की पहल उसी बिन्दु से हुई।

चाहे बच्चों को लेकर ग्यारसपुर, सिरोंज की यात्रा करनी हो या कोई और कार्य, हम सब साथ–साथ। कई प्रमुख लोगों ने जैसे प्रो. पारस दासोत, सुधाकर सांगलीकर, भाऊसाहब पिंगले, अनिल यादव एवं युवाओं ने सराहा और प्रोत्साहित किया। डॉ. साहब भोपाल से प्रकाशित किसी साप्ताहिक समाचार–पत्र के तीन–चार अंक ले आये। उनमें तत्कालीन ख्यातनाम फिल्मकार आई.एस. जौहर के तीन व्यंग्य–नाटक छपे थे। एक था 'मियाँ भुट्टो' दूसरा 'सारे जहाँ से अच्छा' और तीसरे का नाम याद नहीं आ रहा।

हमने तय किया कि इनमे से किसी एक का मंचन हमारा ग्रुप स्वयं करे। इससे बचत कुछ ज्यादा हो सकेगी और हमारा अनुभव भी बढ़ेगा। क्लीनिक पर हम दोनों ने एक स्क्रिप्ट में काट–छांट कर उसे अपेक्षाकृत ज्यादा सटीक बनाया। फिर सबको पढ़कर सुनाया गया। पात्रों की खोज हुई। डायरेक्शन का भार भाई जे.आर. खटावकरजी, मंच व्यवस्था कर्नल साहब की टीम को, डॉ. साहब को पुलिस अधिकारी, नम्रता भाभी को इन्दिरा गाँधी, राजेन्द्र पाण्डेय को अटल बिहारी वाजपेई, मुझे दलित नेता जगजीवनराम बनाया गया। राजीव गाँधी की भूमिका भी थी, पर किसने निभाया याद नहीं। अन्य सहयोगी कलाकारों में रवीन्द्र कुमार जैन, महिला पात्र सुश्री प्रज्ञा नामजोशी आदि कुछ लोग। डॉक्टर साहब के बरेठ रोड वाले आवास पर हम जुटने लगे और रिहर्सल आरम्भ हुआ। मेरी पत्नी गीता उन दिनों 'एडवांस्ड स्टेज ऑफ प्रेगनेंसी' में। उनको घर पर कैसे अकेला छोड़ें। कब क्या जरूरत पड़ जाये तब मोबाइल फोन भी नहीं। मैं उनको भी आग्रह कर ले जाता। वे नाराज भी होतीं – ''वहाँ मैं क्या करूँगी''। मैं कहता – ''तुम हमारे लिए चाय बनाना''। कोई चाय बनाता, कोई सर्व करता, कोई स्नैक्स ले आता, हम परिवार वाले घरों से स्नैक्स बना लाते। उफ्! क्या प्रेम से ओत–प्रोत वे क्षण, अन्य तैयारियाँ भी साथ–साथ होती रहीं। अब तो मैं खादी के कुरते–पाजामे पहनता हूँ, तब समस्या हुई कि माननीय जगजीवनराम जी के पहनावे अनुसार खादी का कुरता – धोती –बण्डी कहाँ से माँगी जाये, सारे ड्रेस एम.एल.ए. फूलचन्द वर्माजी ने उपलब्ध कराये, एक–डेढ़ माह की रिहर्सल के बाद स्टेज–शो का तय हुआ, इस समय एस.डी.ओ.पी. श्री ओ. पी. सारस्वत के मुख्य आतिथ्य में रेलवे स्टेशन के पास मिल रोड स्थित धर्मशाला के चौक में शो किया गया। इस प्रयास से लगभग चार हजार रुपए मिले।

हमारे पास खर्च करने को बारह हजार की पूंजी हो गयी। स्कूल के लिए 3 पक्के कमरे बन गये थे. पर छत ढाले बिना उपयोग नहीं। सामने बरसात दस्तक देने को तैयार, केवल 12 हजार रुपए पास, क्या किया जाए ? कर्नल साहब ने सुझाया कि हल्की नालीदार चादरें चढ़ा दी जाएें, कम बजट में जो सम्भव था, सो किया गया। चद्दरें पहली बरसात झेल नहीं पायीं, कुछ एक उखड़कर नदी किनारे भी जा गिरीं, भाई ने किसी रिक्शेवाले के मार्फत मुझे बुला भेजा, हमारी मण्डली के अधिकांश लोग स्कूल पर एकत्र हुए, कोई चिन्ता में डूबा हुआ, कोई जोश दिलाता, सभी एक– दूसरे को सम्भालते हुए।

इसमें कोई शक नहीं कि शहर के शिक्षा–जगत में महत्त्वपूर्ण योगदान देने के साथ ही कई ऊँचे फलक भी छुए, हम लोग बोर्ड की परीक्षा होते समय कई केन्द्रों पर नकल रोकने के लिए जाते ताकि प्रतिभा के साथ भेदभाव न हो। शहर में सांस्कृतिक चेतना बढ़ाने के लिए कुछ संगीत के आयोजन भी किये। इसी क्रम में कभी सागर से सितार–वादक पण्डित रामजी हर्षे, ग्वालियर से ख्यात संगीतज्ञ पं. बालासाहब पूँछवाले (शास्त्रीय गायकी) उनके दो बेटे–वायलिन और तबलावादक, विदिशा के श्री दीपक पाठक (तबला एवं शास्त्रीय गायन), इन्दौर बैंक में कार्यरत श्री एन.आर. गोड़से (गीत–गजल गायकी) बुलाये गये संगीत–सभा में। हम सबने अपनी मानसिक भूख को शान्त किया, नगरवासियों को करबद्ध प्रणाम। सबने खूब साथ निभाया। यदि मैं कहूं कि 'नवांकुर' और डॉक्टर शिरढोणकर एक दूसरे के पर्याय और पूरक बन गये, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। आज इस विद्यापीठ का स्वरूप देख मन फूला नहीं समाता। इस बात का सुख मिला कि उनका, कर्नल चौरसिया, नरेन्द्र शर्मा, मुन्ना भैया, रमेश व्यासजी, मेरा एवं अन्य युवा साथियों का सपना साकार होता दिखायी दे रहा है।

मेरे जीवन का बासौदा प्रवास अभिन्न बना। डॉक्टर, मित्र, सहयोगी, सभी ऐसे जुड़े कि धड़कन बन गये। भाई ने सब किया, पर जमकर प्रैक्टिस नहीं की और अन्य डॉक्टरों की तरह पैसे नहीं जोड़े, घर एवं नर्सिंग होम के लिए बैंक का लोन चल रहा था, जो समय से अदागयी न होने पर बढ़ता जा रहा था। कभी–कभी भाभीजी, जो स्वयं एक अच्छी डॉक्टर रहीं, खीझकर कहतीं – ''वर्मा जी, आप ही समझाओ इनको। क्लीनिक पर ध्यान नहीं देते, सोचते नहीं कि उनके ऊपर एक परिवार भी आश्रित है। मैं अकेले क्या–क्या करूँगी!'' एक व्यक्तिगत अन्तर्व्यथा। मैं भाभीजी को कहता – ''आप एकदम चिन्ता न करो। भगवान् ने सबकुछ तो दिया है और देंगे। क्या कमी है'' उधर जब डॉक्टर को पूछता, वे कहते – ''क्या करूँ यार, डॉक्टर बनना था, सो बन गया। पर मैं केवल यही करूँ, यह सम्भव नहीं। मेरी नाव नदी के बीच आ गयी है। किधर जाऊँ, तय करना मुश्किल है।''

सच तो यही था कि इस पेशे के कारण ही लोग जुड़ते गये और समूह बढ़ता गया। इस सच को कौन बदल सकता है कि कर्म ही हमें लोगों के दिलों पर राज करवाता है। पिछले 35 सालों की घटनाएँ बार–बार कह रही हैं – 'मैं कहीं नहीं गया। यहीं हूँ तुम्हारे पास। केवल देहत्याग किया है। मैं भी तो आजाद बनूँ।

हाल के दिनों में रवीन्द्र जैन ने फोन किया और बताया कि मेरा हमदम चल बसा। मन कुछ अजीब हलचल से भर उठा। यह यकीन करने लायक बात नहीं। कई एक को फोनकर पूछा। मन को समझाना पड़ा। चार–पाँच बार विजयस्तम्भ, महाराणा प्रताप नगर– ।, भोपाल उनके निवास पर गया। फोन पर बात हुआ करती। 'नवांकुर' का स्टेट्स रिपोर्ट पूछता। वे बताते भविष्य में क्या–क्या करना है, चर्चा होती। लगभग चार दशक पुरानी दोस्ती में शायद ही कभी उन्होंने फोन किया हो। मैं बार–बार शिकायत करता वे हँस कर टाल जाते, वह एक आजाद पंछी की तरह था। अलमस्त और फक्कड़। क्या विशाल, गहरी नदी, पहाड़, हवा को बांधा जा सकता है?ऐसा ही जिन्दादिल था वह। बहुत कुछ है कहने को, पर शब्द और समय की अपनी मर्यादा है।

इसलिए बस, इतना ही। भगवान् उसे चिरस्थायी सुख देना। वह 'वहाँ' भी अपनी प्यारी हँसी बिखेर रहा होगा। उसे नमन्!

सम्पर्क : 53 उमेशनगर, अन्नपूर्णा रोड, इन्दौर–452009
फोन :0731–2484964, मोबाइल 8959221233

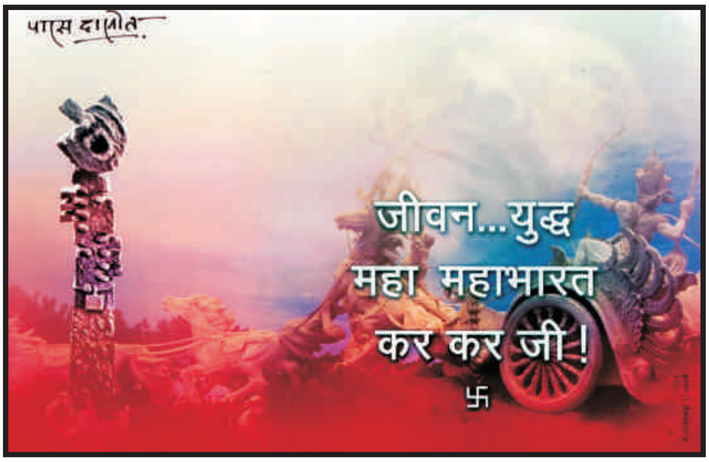

डॉ. विजय शिरढोणकर – अदभुत व्यक्तित्व

– डॉ. आर.के. चौगाँवकर – सौ. पद्मा चौगाँवकर

डॉ. विजय शिरढोणकर...... यह नाम सामने आते ही सूर्य के समान प्रकाशवान्, ऊर्जावान्, बिजली मुद्रा लिये आंखों के समक्ष उनकी मूर्ति दृश्य होती हैं।

...... बात उन दिनों की है, जब 19 60–70 के दशक में डॉ. विजय शिरढोणकर से मेरा प्रथम परिचय हुआ। मैं उन दिनों शासकीय विज्ञान महाविद्यालय, ग्वालियर में रसायन–शास्त्र विभाग में व्याख्याता–पद पर कार्यरत था और बी.एस.सी. कक्षा में विजय अध्ययनरत थे–एक मेधावी छात्र के रूप में। तत्पश्चात् मेडिकल शिक्षा के लिए वे मेडिकल कॉलेज गये। उनके अग्रज मुझसे से परिचित थे।

अगस्त, 1984 में मैं पदोन्नत होकर शासकीय महाविद्यालय, गंजबासौदा में आ गया।

..... अचानक कुछ समय बाद ही बासौदा में डॉ. विजय शिरढोणकर से भेंट हुई। सम्पर्क बढ़ता गया, घनिष्ठता बढ़ती गयी। पता चला, मेडिकल शिक्षा पूर्ण होने पर वे झाबुआ जिले के अलीराजपुर में पदस्थ थे। उसी दौरान उनके पूज्य पिताजी का स्वर्गवास हुआ, ग्वालियर में। उस समय अलीराजपुर से ग्वालियर आने के सभी रास्ते नदियों में बाढ़ के कारण बन्द थे। इस कारण वे पूज्य पिताजी की अंत्येष्टि में भी सम्मिलित नहीं हो पाये, जिसका उन्हें अत्यन्त दुःख हुआ और उद्विग्न होकर शासकीय सेवा को 'राम–राम' कर वे ग्वालियर आ गये। यहीं से उनके जीवन का मार्ग परिवर्तित हुआ और स्वतन्त्र (निजी) अस्पताल शुरू किया। अपने साहित्य–प्रेमी पूज्य पिताजी एवं परिवार के प्रति वे अत्यन्त निष्ठा रखते थे।

अपने एवं पत्नी डॉ. नम्रता के मधुर व्यवहार, कुशल चिकित्सक एवं अथक परिश्रम के के कारण अपनी कार्यक्षमता से उनका नाम बासौदा में ख्याति प्राप्त करने लगा।

परिवार–सहित हम लोगों की घनिष्ठता बढ़ती गयी। यहाँ पर पूर्व से निवासरत श्री खटावकर, श्री बक्षी आदि सप्ताह में अक्सर दो–तीन बार सपरिवार डॉ. विजय एवं परिवार से मिलकर हँसी–ठिठोली, डिनर साथ करते, प्रफुल्लित वातावरण मिलता।

डॉ. विजय नयी–नयी कल्पनाओं के धनी तो थे ही। उस समय बासौदा में 'महाराष्ट्र समाज' अस्तित्व में था, किन्तु अधिक विस्तृत रूप नहीं था। डॉ. विजय की सहायता से श्री खटावकर, श्री बक्षी, मैं स्वयं एवं परिवार के सदस्यों ने इस संस्था को नवरूप देकर विकसित किया। इसके अन्तर्गत अनेक मनमोहक कार्यक्रमों का यशस्वी आयोजन किया गया।

..... इसी दौरान एक नाटक मंचन करने का विचार आया। नाटक का दिग्दर्शन मुझे करना था। 'उधार का पति' तीन अंकी नाटक करना तय किया। विजय को भी निवेदन किया, जो वे सहर्ष मान गये।

इस नाटक के अत्यन्त सफल प्रयोग में डॉ. विजय शिरढोणकर ने पुलिस इंस्पेक्टर की भूमिका बखूबी निभायी। तत्कालीन शासकीय अधिकारियों का भी सहयोग सराहनीय रहा था।

इस प्रकार एक बहुमुखी प्रतिभा के रूप में भी वे सामने आये। डॉ. विजय शिरढोणकर को स्वयं के निवास की समस्या सामने आयी। नवप्रयोगवादी तो वे थे ही। बरेठरोड पर अपने लिए उन्होंने एक भू–भाग क्रय कर उस पर स्वयं का भवन–निर्माण किया, जिसमें बासौदा में प्रथम बार ही अग्निरोधक मटेरियल से बने ब्लॉक्स से मकान निर्मित किया गया था, जो अपने आप में एक अनूठा प्रयोग

था। उस भवन का नाम उन्होंने अपने पूज्य पिताजी 'रघुनाथ' के नाम पर 'रघुवंश' रखा।

इस बीच मेरा और मेरी पत्नी का स्थानान्तरण गुना महाविद्यालय हो गया। लगभग सात साल पश्चात् मैं बासौदा महाविद्यालय में प्राचार्य–पद पर आया। इस अवधि के दौरान भी डॉ. विजय शिरढोणकर ने अनेक साहित्यिक–सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित कर अपने नवीन कल्पनाओं का परिचय दिया।

इसी समय उनकी एक अन्य नयी कल्पना साकार हो रही थी– एक स्तरीय स्कूल की स्थापना। साथ ही, लगभग पचास परिवारों के लिये स्वयं के निवास की व्यवस्था।

स्कूल हेतु शैशव–अवस्था में 'नवांकुर विद्यापीठ' की स्थापना की गयी थी, जो वर्तमान में एक स्तरीय एवं प्रतिष्ठित हा.से.स्कूल के रूप में ख्यातिप्राप्त हैं। इस स्कूल की स्थापना, निर्माणसंचालन आदि में श्री शैलेन्द्र दीक्षित (प्राचार्य), समस्त स्टॉफ, श्री शर्मा, श्री अग्रवाल, श्री खटावकर, श्री व्यास, श्री डोंगरे, श्री संदीप रावत एवं श्री बक्षी आदि का भरपूर सहयोग मिला। इस प्रकार अपनी कल्पनाओं को साकार करने में दृढ़ निश्चय, धैर्य रखने की विलक्षण प्रतिभा डॉ. विजय शिरढोणकर में थी।

लगभग पचास परिवारों के लिए स्वतन्त्र भवन निर्माण के लिए भी उन्होंने अथक प्रयास किये। एक भू–भाग क्रय कर लोकमान्य गृह–निर्माण–संस्था का गठन किया और इसके अन्तर्गत विजयनगर सेक्टर–'ए' एवं 'बी' में लगभग पचास परिवारों को गृह निर्माण करवा दिये– वे भी बिना किसी लाभ के लिये बिना।

यह उनका समाज के प्रति सहायता करना एवं उदारवादी दृष्टिकोण का परिचायक है।

लगभग 1980–90 के दशक में पुत्रियों की उच्च शिक्षा हेतु वे भोपाल में निवास करने लगे फिर भी बासौदा में स्थित 'नवांकुर विद्यापीठ' के प्रति निष्ठा एवं कर्त्तव्य के कारण वे भोपाल से बासौदा आवश्यकतानुसार आते–जाते। उनकी पुत्रियों ने भी अच्छी उच्च शिक्षा प्राप्त की।

ज्येष्ठ पुत्री श्रद्धा ने नवांकुर विद्यालय में प्रतिवर्ष मेधावी छात्रों हेतु छात्रवृत्ति प्रदान की है। श्रीमती श्रद्धा वर्तमान में अमेरिका में एक ख्यातिप्राप्त कम्पनी में इंजीनियर है।

भोपाल में रहते हुए भी डॉ. विजय शिरढोणकर अनेक कार्यक्रम आयोजित करते रहे, साहित्य की विरासत तो उन्हें परिरवार से ही मिली थी। अतः, भोपाल में उन्होंने 'अक्षर–शिल्पी' पत्रिका का भी सम्पादन किया। 'अक्षर–शिल्पी' आज एक स्तरीय साहित्यिक पत्रिका के रूप में ख्यात है।

कुछ समय से डॉ. विजय शिरढोणकर का स्वास्थ्य खराब चल रहा था, अनेक बार उन्हें अस्पताल में भर्ती रहना पड़ा। उनकी पत्नी डॉ. नम्रता और पुत्रियाँ श्रद्धा, यशदा, मेधा सभी उनके स्वास्थ्य का अत्यन्त ध्यान रखती थीं। उनके स्वास्थ्य–लाभ के लिए भरसक प्रयास करती रहीं, ... किन्तु 6 जुलाई, 2016 का दिन इस बहु–आयामी व्यक्ति को काल कवलित कर ले गया। एक अपूरणीय क्षति!

डॉ. विजय शिरढोणकर के इस असामयिक निधन पर हम सपरिवार अत्यन्त दुःखी हैं। ईश्वर से करबद्ध प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे एवं परिवार–जनों को सान्त्वना देकर दुःख सहन करने का सामर्थ्य प्रदान करे।

– विजय नगर, काला बाग, गंजबासौदा

Save Tree's, Save Greener — **Monika Raghuwanshi** Class-XII (Bio)

डॉ. विजय शिरढोणकर : "सामाजिक सरोकारों के लिए समर्पित व्यक्तित्व"

जयनारायण मेहता

डॉ. विजय शिरढोणकर और श्रीमती नम्रता शिरढोणकर डॉक्टर की हैसियत से गंजबासौदा आये और अपना क्लिनिक प्रारम्भ किया। स्वभाव से मिलनसार होने तथा विचारों में अपने समय की विसंगतियों के प्रति बैचेनी उनके व्यक्तित्व का एक अनिवार्य हिस्सा था। धीरे–धीरे उनका उठना–बैठना शहर के पढ़े–लिखे लोगों के बीच होने लगा। विचार गोष्ठियों में अपने विचार निर्भीकता के साथ रखते। उनकी चिन्ताओं में समाज में व्याप्त अन्धविश्वास, अशिक्षा, सरकार और सरकारी–तन्त्र द्वारा भोले–भाले लोगों को निरन्तर छले जाने के प्रति गहन आक्रोश हुआ करता था। कर्नल चौरसिया से उनकी बड़ी आत्मीयता थी और उनकी ही वजह से मेरा उठना–बैठना भी उनके साथ अक्सर होता रहता था। साहित्य और कला के प्रति उनका लगाव काफी गहरा था और उतनी ही उनकी उनके प्रति अच्छी–खासी समझ भी थी। पेशे से डॉक्टर होने के बाद भी पैसे के प्रति वैसी आसक्ति मैंने उनमें कभी नहीं देखी, जैसी अन्य डॉक्टरों में सामान्यतः देखने को मिलती है। अस्सी के दशक में जिन लोगों से विभिन्न मुद्दों पर अक्सर बातचीत करते थे। उनमें कृष्ण बक्षी, पारस दासोत, चन्द्रकुमार तारण, अनिल यादव और शहर के और भी बहुत–से वे लोग, जो जनजागरण और सुधारने में आस्था रखते थे, शामिल थे।

डॉ. शिरढोणकर के मन में वर्तमान शिक्षा व्यवस्था और शिक्षा के व्यवसायीकरण के प्रति गहन असन्तोष था। उनका विरोध अंग्रेजी से नहीं, बल्कि अंग्रेजियत से था। वे उन लोगों को बिलकुल भी पसन्द नहीं करते थे, जो थोड़ी बहुत अंग्रेजी पढ़–लिखकर भारतीय सांस्कृतिक विरासत और उसके स्वस्थ जीवन–मूल्यों का मजाक उड़ाते थे। आजादी की लड़ाई में देशभक्तों के बलिदान को पूरे गौरव के साथ स्मरण करते थे। वे अपने विचारों में सुभाषचन्द्र बोस, लाला लाजपत राय, भगतसिंह, बिस्मिल, राजगुरु और खुदीराम बोस की विचारधारा के अधिक निकट थे।

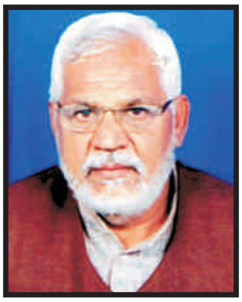

शिक्षा के क्षेत्र में सार्थक हस्तक्षेप एवं पहल के तारतम्य में उन्होंने 30–35 साल पहले नवांकुर विद्यापीठ के रूप में एक बहुत छोटा–सा प्रयास किया। उस महत्त्वपूर्ण पहल के साक्षी के रूप में शहर के लगभग सभी बुद्धिजीवी सम्मिलित हुए। हम सब को तब यह अहसास नहीं था कि डॉ. शिरढोणकर और रमेश व्यास की यह पहल कालान्तर में शिक्षा के क्षेत्र में एक मिसाल और किंवदन्ती बन जायेगी। एक झोपड़ी में प्रारम्भ किया गया विद्यालय आज नगर का ही नहीं, बल्कि प्रदेश के अच्छे शिक्षा– संस्थानों में शामिल हो चुका है। नवांकुर विद्यापीठ की यात्रा में डॉ. शिरढोणकर की कल्पना और श्रम, प्राचार्य श्री शैलेन्द्र दीक्षित और नवांकुर के शिक्षकों का त्याग और समर्पण अपनी–अपनी जगह महत्त्व रखते हैं। नवांकुर के छात्रों ने राज्यस्तर तक अपनी अच्छी–खासी पहचान बनायी है। यह विद्यालय अपनी मिसाल आप है, क्योंकि यहां सिर्फ पाठ्यक्रम ही ठीक से नहीं पढ़ाया जाता है, बल्कि पाठ्येत्तर गतिविधियों में संस्कार, सांस्कृतिक विरासत, संगीत और कला के क्षेत्र में भी छात्रों को ठीक–ठीक ज्ञान दिया जाता

है। आज नवांकुर के छात्र पूरे हिन्दुस्तान में फैले हुए हैं। वे हमेशा अपने विद्यालय और अपने–अपने शिक्षकों को पूरे सम्मान के साथ याद करते हैं। मैं यहां नवांकुर विद्यापीठ के शैक्षणिक स्तर से जुड़ी एक घटना का उल्लेख करना अपना दायित्व समझता हूँ। सात साल पहले माध्यमिक–शिक्षा मण्डल के मान्यता–निरीक्षण–दल में एस.डी.एम. मिश्रा जी, मैं और डीपीसी पवार थे। हमारे शहर के प्रतिष्ठित अंग्रेजी माध्यम के स्कूल के निरीक्षण के लिए गये। वहाँ एस.डी.एम. मिश्रा जी ने कक्षा 12 की अंग्रेजी की कक्षा में एक वाक्य ''मैं खाना तो चाहता हूँ मगर खा नहीं सकता'' अंग्रेजी में अनुवाद करने को कहा। किसी छात्र ने सही उत्तर नहीं दिया और पढ़ा रही अंग्रेजी की अध्यापिका ने भी सही उत्तर नहीं दिया। एस.डी.एम. मिश्रा नाराज हुए। अंग्रेजी माध्यम के स्कूल की यह स्थिति, किन्तु नवांकुर के निरीक्षण में उन्होंने यही सवाल नवांकुर के छात्रों से पूछा, तो उन्होंने तुरन्त सही उत्तर दे दिया। मिश्रा जी ने पूछा–''अंग्रेजी कौन पढ़ाता है'' छात्रों ने शैलेन्द्र दीक्षित जी की ओर इशारा कर दिया। मिश्रा जी ने दीक्षित जी की पीठ छात्रों के सामने ठोंकी।

आज डॉ. शिरढोणकर भले न रहे हों, किन्तु नवांकुर विद्यालय के छात्रों की विभिन्न गतिविधियों में वे हमेशा विद्यमान रहेंगे। उन्हें एक ऐसा विद्यालय के लिए हमेशा याद किया जायेगा, जिसमें शिक्षा तो दी जाती है, किन्तु शिक्षा का धन्धा नहीं किया जाता।

–जयनारायण मेहता
रिटा. प्राचार्य, गंजबासौदा

नवांकुर विद्यापीठ के आधार स्तम्भ-आदरणीय डॉ. विजय शिरढोणकर

– डॉ. डी.पी. शर्मा

सम्मानीय नागरिक बन्धुओ, देवियो, नवांकुर–परिवार, छात्र–छात्राओ,

मुझे विवश होकर लिखना पड़ रहा है कि क्रियाशील प्रगति परिषद् (नवांकुर विद्यापीठ, नवांकुर संगीत–विद्यालय, डॉल्फिन स्कूल) के अध्यक्ष एवं स्तम्भ आदरणीय डॉ. विजय शिरढोणकर अब हमारे बीच नहीं है, किन्तु उन्होंने सचमुच में हमारे बीच जो प्रगति का उपवन खड़ा किया, वह प्रेरणा एवं सुदिशा देने के रूप में सदैव स्मरणीय रहेगा। साथियो! मुझे आदरणीय डॉक्टर साहब के साथ सीखने का, काम करने का, जनसेवा से जुड़ने का अवसर मिला।

उन्होंने अपने कार्यों में सच्चाई, पारदर्शिता और व्यापक दृष्टिकोण को चुना। वे सदैव सरल, सादा जीवन और हँसमुख स्वभाव की पहचान बनाये रहे। साथ ही, संस्था में निष्पक्षता बनाये रखने की अन्तिम साँस तक सीख देते रहे। मैं बस्ती के सम्माननीय नागरिकों, नवांकुर–परिवार, शिक्षक, छात्र–छात्राओं, पालकगण से विनम्र अनुरोध करता हूँ कि स्व. डॉ. साहब की स्मृतियों, सेवाओं और कर्त्तव्य के प्रति स्नेह, सहयोग और अपनेपन की भावना एवं दृष्टिकोण पूर्ववत् बनाये रखें। श्रद्धांजलि अर्पित करते समय हम ऐसा संकल्प लें।

शिरढोणकर जी की दिवंगत आत्मा को शान्ति मिले, उनके परिवारजनों को दुःख की घड़ी में साहस धैर्य मिले, ऐसी मैं परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ। ऊँ शान्तिः, शान्ति, शान्तिः!

– डॉ. डी.पी. शर्मा (बी.ए.एम.एस., जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, एक्स–फिजीशियन, म.प्र.शासन)
स्टेशन रोड, गंजबासौदा, जिला विदिशा

डॉ. विजय शिरढोणकर मेरे अभिन्न मित्र

मुन्नालाल अग्रवाल

डॉ. विजय शिरढोणकर न केवल क्रियाशील प्रगति परिषद के अध्यक्ष थे, वरन् मेरे अभिन्न मित्र थे। एक मित्र होने के नाते मैं उन्हें बहुत करीब से जानता था। वे हमेशा कुछ न कुछ नवीन करना चाहते थे। कुछ ऐसी नवीन कार्य जो समाज को भी नवीनता का आयाम दें। उनका कहना था कि जिस समाज ने हम पर भरोसा करके हमें नवांकुर जैसी संस्था को खड़ा करने हेतु नई पीढ़ी को हमारे हाथों में सौंपा है, हमारा भी यही कर्त्तव्य है उसी शिद्दत से हम भी उन्हें भारत के सच्चे नागरिक प्रदान करें, जो देश, समाज, नगर व राष्ट्र को गौरव प्रदान करें। वे जब भी भोपाल से बासौदा आते सबसे पहले मुझे याद करते थे। उनका हंसमुख चेहरा उत्कृष्ट व्यक्तित्व व प्रेरणास्पद विचार सदैव हम सबका मार्गदर्शन करते रहेंगे।

मुन्नालाल अग्रवाल

संरक्षक—क्रियाशील प्रगति परिषद्

डॉ. विजय शिरढोणकर एक ऐसा व्यक्तित्व, जिसको कागज के चंद पन्नों पर लिख पाना संभव नहीं। ऐसे विचारशील व्यक्तित्व का साथ मुझे गौरवान्वित करता था।

जब नवांकुर के संस्थापक श्री व्यास जी की स्थायी नौकरी रेल्वे में लग गई, उनका वहां जाने का विचार नहीं था, लेकिन डॉक्टर साहब ने उन्हें परामर्श दिया कि आप हम पर विश्वास करें, विद्यालय की चिन्ता छोड़ें। डॉक्टर साहब से अपने व्यक्तित्व, कार्यशैली व विद्यालय के प्रति समर्पित भावना का परिचय दिया। उन्होंने विद्यालय को आगे बढ़ने व बनाये रखने के प्रयास में अपने व्यवसाय तक को तिलांजलि दे दी। क्लिनिक पर आने वाले मरीज यह जानने समझने लगे कि डॉक्टर साहब क्लिनिक पर नहीं विद्यालय में मिलेंगे। इस तरह पेशे से डॉक्टर होने के ताने यह व्यक्ति एक ऐसी सामाजिक संस्था को विकसित करने में जुट गया, जिसका उद्देश्य केवल किताबी शिक्षा देना नहीं, अपितु देश के ऐसे नागरिक तैयार करना जो समाज को एक नई दिशा प्रदान करे। वे एक व्यक्ति नहीं वरन एक विचार थे जो सदियों तक हमारा मार्ग प्रशस्त करते रहेंगे।

एन.पी.शर्मा

संरक्षक—क्रियाशील प्रगति परिषद्

श्रद्धेय डॉ. विजय शिरढोणकर एक विलक्षण व्यक्तित्व

डॉ. महेन्द्र प्रताप मेहता

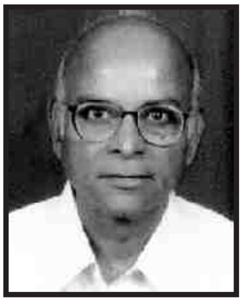

ग्वालियर स्टेट के भाण्डेर कस्बे के सुशिक्षित परिवार में जन्म, पिता श्री रघुनाथराव मराठी भाषा के पत्रकार, माँ श्रीमती राजाबाई कुशल गृहिणी। प्राथमिक शिक्षा कस्बे की शाला में, उच्च शिक्षा करीबी नगर ग्वालियर में। गजराराजा मेडिकल कालेज से स्नातक उपाधि (एम.बी.बी.एस.)।

प्राथमिक स्वास्थ्य–केन्द्र, सेन्धवा, अलीराजपुर (जिला झाबुआ) में 2 वर्ष शासकीय सेवा। महात्मा गाँधी मेमोरियल मेडिकल कॉलेज, इन्दौर से स्नातक। मृदुभाषी डॉ. नम्रता रेडरेकर (एम.बी.बी.एस.) से विवाह।

गंजबासौदा में प्रायवेट मेडिकल प्रेक्टिस। खुश मिजाज, व्यवहार–कुशल दम्पति ने शीघ्र ही नगर को अपना बन लिया। चिकित्सकीय सेवा के साथ–साथ समाज–सेवा के क्षेत्र में पदार्पण किया।

शिक्षा को अपना दूसरा कार्यक्षेत्र बनाया। नवांकुर विद्यापीठ उनकी प्रमुख कार्यस्थली बना। बहुमुखी प्रतिभा के धनी, महत्त्वाकांक्षी, प्रगतिशील डॉ. शिरढोणकर ने संस्था को नयी ऊँचाई तक पहुँचाया। अनुशासन–प्रिय मैनेजमेन्ट–गुरू ने संस्कारी कर्मठ शिक्षकों के सहयोग से विद्यार्थियों की प्रतिभा को निखारने का अप्रतिम प्रयास किया। उत्कृष्ट परीक्षा–परिणाम के साथ ही विज्ञान, साहित्य, कला एवं खेल–कूद की विभिन्न विधाओं में अपनी प्रतिभा विकसित करने का छात्रों को अमूल्य अवसर दिया। नवाकुंर के अन्यान्य प्रकल्प यथा डॉल्फिन अंग्रेजी माध्यम विद्यालय, नवांकुर संगीत विद्यालय, नवांकुर स्कूल ऑफ कम्प्यूटर साइंस संस्था की उत्तरोत्तर प्रगति के द्योतक हैं। नवांकुर विद्यापीठ आज नगर की सर्वाधिक लोकप्रिय आदर्श शिक्षण संस्था है। इस अपूर्व सफलता का श्रेय जाता है, डॉ. विजय शिरढोणकर की प्रेरणा, मार्गदर्शन एवं कर्मठ प्राचार्य व लगनशील अध्यापकों की जुझारू टीम को।

प्रौढ़–शिक्षा, साक्षरता–मिशन आदि शासकीय योजनाओं के संचालन में डॉ. शिरढोणकर का विशेष योगदान रहा। नवोन्मेषी उद्यमी कॉलोनाइजर के रूप में उन्होंने विजय नगर कॉलोनी का विकास किया।

साहित्य में उनकी प्रगाढ़ रुचि थी। क्रमशः, अक्षर शिल्पी आदि पत्रिकाओं का प्रकाशन किया। कई हिन्दी, मराठी पुस्तकों की समीक्षा की। रंगमंच के क्षेत्र में भी विशेष रुचि रही। डॉ. श्री चौगांवकर के निर्देशन में ''उधार का पति'' नाटक का दो बार मंचन किया, जिसमें डॉ. शिरोणकर ने एक थानेदार की भूमिका का कुशल अभिनय किया। नगर में कई शिक्षाप्रद नुक्कड़ नाटकों का आयोजन किया।

भोपाल–निवास के दौरान भी डॉ. साहब सामाजिक सेवा के क्षेत्र में अत्यन्त सक्रिय रहे। अपने पिता की स्मृति में दुष्यन्त कुमार संग्रहालय में एक सभागृह का निर्माण कराया। झुग्गी–झोपड़ी में रहने वाले गरीब बच्चों की शिक्षा की व्यवस्था की तथा गरीब महिलाओं को जरदोजी–कला का प्रशिक्षण दिलवाकर आर्थिक रूप से आत्म–निर्भर बनाने हेतु अथक प्रयास किये।

पाँच भाई व तीन बहनों के परिवार में डॉ. साहब एवं उनकी जीवन–संगिनी वात्सल्य–मूर्ति डॉ. नम्रता शिरढोणकर ने अच्छा सामंजस्य बनाये रखा। डॉ. साहब की तीनों मेधावी पुत्रियों श्रद्धा, यशदा, मेधा ने उच्च शिक्षा ग्रहण

की एवं विवाहोपरान्त भी हर सुख–दुःख में अपने माता–पिता के साथ रहीं। कभी उन्हें बेटे की कमी महसूस नहीं होने दी।

डॉ. शिरढोणकर की सफल जीवन–यात्रा का श्रेय उनकी ममतामयी अर्द्धांगिनी डॉ. नम्रता शिरढोणकर को जाता है। डॉ. साहब के हर संघर्ष में वे कन्धे–से–कन्धा मिलाकर उनके साथ प्रसन्नतापूर्वक चलीं।

अपने सहृदय मित्र के आकस्मिक निधन के दुःखद समाचार से हतप्रभ रह गया। दिवंगत आत्मा को मेरी हार्दिक श्रद्धांजलि। ईश्वर दिव्यात्मा को शान्ति प्रदान करे एवं उनके परिजनों को उनके विछोह का दुःख सहने की शक्ति प्रदान करे।

— डॉ. महेन्द्र प्रताप मेहता
मेहता क्लिनिक, मिल रोड, गंजबासौदा

श्रद्धेय डॉ. विजय शिरढोणकर जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का पर्याय नवांकुर विद्यापीठ–बासौदा

डॉ. एस. एन. गौर

श्रद्धेय डॉ. साहब का स्मरण आते ही, मन–मस्तिष्क आत्म–विभोर होकर, सुखद अनुभूति होने लगती है। ऐसे दिव्य व्यक्तित्व की परिकल्पना ने इस नगर को नवाचार एवं कीर्तिमान की अखण्ड ज्योति बनाये रखने वाले 'नवांकुर विद्यापीठ' की सौगात दी है, जो अब नगर की पहचान बनकर, प्रदेश में अपना उल्लेखनीय स्थान बना चुकी है।

नवांकुर विद्यापीठ की स्थापना, संचालन एवं विकास में, श्रद्धेय डॉ. साहब की भूमिका ठीक उसी प्रकार रही, जैसी विख्यात शान्तिकुंज (हरिद्वार) के सम्बन्ध में, प्रातः स्मरणीय आचार्य श्रीराम शर्मा जी की रही है।

हमारी धार्मिक मान्यता के अनुसार आत्मा अजर–अमर होती है, इसलिए आज भी पावन शान्तिकुन्ज में आचार्य श्रीराम शर्मा जी की दिव्य–आत्मा का अप्रत्यक्ष रूप से आभास होता है, ठीक उसी प्रकार से मेरे विचार से श्रद्धेय डॉ. साहब की दिव्य–आत्मा का भी हमें सदैव नवांकुर विद्यापीठ में आभास होगा।

श्रद्धेय डॉ. साहब ने अपनी पारखी नजर एवं दूरदर्शिता से नवांकुर विद्यापीठ के प्रकल्प को आगे इसी लय में बढ़ाने के लिए सौ टंच एवं पूर्ण उपयुक्त श्री शैलेन्द्र दीक्षित जी को चुना है, वह अपने–आप में उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का आगे का नीति के साथ ही आपके सपनों को साकार रूप देने वाला, ''पावन शिक्षा धाम'' का दिग्दर्शन होने लगता है।

श्रद्धेय डॉ. साहब का व्यक्तित्व एवं कृतित्व तथा नवांकुर विद्यापीठ एक सिक्के के दो पहलू के समान हैं अर्थात् एक–दूसरे के पर्याय हैं।

शिक्षा–जगत् में आपकी अनवरत् साधना, एक वैज्ञानिक की खोज की साधना की भाँति समाज को सदैव लाभान्वित करती रहेगी, साथ ही, आपकी सेवा एवं छवि अन्य शैक्षणिक संस्थाओं के लिए एक उत्कृष्ट प्रेरणा, आईना एवं पैमाने का कार्य भी करेगी।

श्रद्धेय डॉ. साहब अच्छे व्यक्तित्व के धनी होने के साथ–साथ एक नेक इंसान भी थे। हर समय चेहरे पर प्रसन्नता, प्रेम, सन्तोष, प्रोत्साहन, सेवा एवं लगाव का भाव झलकता रहता था, इसलिए उनसे मिलने पर आनन्द, उत्साह एवं प्रेरणा मिलती थी।

उनकी नेक नियति की वजह से ही, नवांकुर विद्यापीठ का हर वर्ग का सम्माननीय कर्मचारी आत्मबल से, सबल होकर एक आदर्श भूमिका निभाकर शिक्षा जगत का गौरव बढ़ा रहा है, जो बासौदा नगरवासियों के लिए गर्व की बात है।

मैं ऐसे चिरस्मरणीय दिव्य व्यक्तित्व को शत्–शत् नमन करते हुए श्रद्धा–सुमन अर्पित करता हूँ।

— डॉ. एस.एन. गौर
एल.बी.एस. कॉलेज, गंजबासौदा

बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ. विजय शिरढोणकर

रविन्द्र जैन

भारी मन और बोझिल हृदय से अन्तिम दर्शन कर विदाई देते हुये आँखे स्वाभाविक रूप से भर आई। 33–34 वर्ष पूर्व की यादें तरोताजा हो गई, जब डॉ.सा. के सम्पर्क में आया था एवं एक बार सम्पर्क में आने के बाद डॉ. साहब से जैसे प्रतिदिन ही भेंट होने लगी। बहुमुखी प्रतिभा एवं आकर्षक व्यक्तित्व के धनी डॉ.विजय शिरढोणकर का उस समय में पेशेगत कुशलता की वजह से नगर के प्रबुद्धवर्ग में काफी ख्यात नाम रहा। डॉ. साहब के साथ पारासरी नदी के तट पर स्थित उनके क्लीनिक पर प्रायः 1–2 घण्टे की बैठक प्रतिदिन ही होती थी। जिसमें हमेशा नगर के विकास, नवांकुर स्कूल के शैक्षणिक स्तर तथा कलात्मक गतिविधियों के संबंध में ही चर्चा होती थी।

डॉ. साहब का व्यक्तित्व ही ऐसा था कि एक बार उनके सम्पर्क में आने वाला व्यक्ति प्रभावित हुये बिना नहीं रहता था। शिक्षा एवं कला के क्षेत्र में उन्होंने बासौदा नगर को महती योगदान दिया।

कस्बाई प्रकृति की विकासशील बस्ती में उन्होंने नगर की चिकित्सकीय आवश्यकता की पूर्ति के लिये बरेठ रोड स्थित कालाबाग में प्रथम नर्सिंग होम की स्थापना की एवं तदोपरान्त नवांकुर स्कूल के माध्यम से शैक्षणिक विकास में योगदान देना प्रारंभ किया उसी का परिणाम है कि आज नवांकुर स्कूल का नगर की शिक्षा संस्थाओं में आज भी अहम स्थान है तथा कान्वेण्ट संस्कृति के मध्य भारतीय संस्कृति को बचाए रखने में अपना योगदान दे रहा है।

डॉ. साहब ने कला के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित करने के लिए आई.एस.जौहर के ''सारे जहाँ से अच्छा'' नाटक का मंचन स्थानीय रूप से कलाकार तैयार कर, लगभग दो माह तक अपने बरेठ रोड स्थित निवास पर सतत् रिहर्सल कर 05.06.1983 को हितकारिणी धर्मशाला में सफल मंचन कराया, जिसे नगर में काफी सराहा गया इसके मंचन में अभिनय करने का मौका मुझे भी प्राप्त हुआ। उक्त नाटक के लिये डॉ. साहब के प्रयासों से शिक्षा, बैंक, छात्र एवं समाज के मध्य से ही पात्रों का चयन किया गया।

इसी के उपरान्त नगर में स्थाई रूप से नाम स्थापित करने के उद्देश्य से विजय नगर कालोनी की स्थापना कर नगर में प्रथम नियोजित कालोनी को आकार दिया एवं ज्ञान–विज्ञान जत्था, जन अभियान परिषद जैसे अनेकों अभियान को एन.जी.ओ. के माध्यम से समाज के विकास में योगदान दिया।

हंसमुख स्वभाव व कुशल नेतृत्व के धनी डॉ.साहब से लगभग 15 वर्ष के सम्पर्क काल के दौरान कभी भी डॉ. साहब को क्रोध या आवेग में देखा हो ऐसे क्षण याद नहीं है।

लगभग छः माह पूर्व ही उनके भोपाल स्थित निवास पर मुलाकात करने का अवसर मिला, उस समय भी वह अपने उसी अल्हड़–मस्त स्वभाव से मिले एवं उम्र का तकाजा करते हुये शारीरिक दुर्बलता की स्थिति से अवगत कराया।

ईश्वर उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें एवं ईश्वर से कामना है कि वह जहाँ भी हों अपने उसी अंदाज में हों...... ......।

श्रद्धांजलि

आदरणीय डॉ. विजय शिरढोणकर साहब के आकस्मिक निधन का समाचार सुनकर नागरिक सेवा समिति–परिवार अत्यन्त दुःखी है। डॉक्टर साहब मन से निर्मल, वाणी से स्पष्टवादी, कर्म से दृढ़ निश्चयी थे। स्वभाव से सरल सहज एवं सौम्य व्यक्तित्व के धनी थे उन्होंने चिकित्सा के क्षेत्र में तो सराहनीय कार्य किये ही, परन्तु शिक्षा के क्षेत्र में डॉक्टर साहब का योगदान हमेशा याद किया जायेगा। उन्होंने नवांकुर शिक्षा–संस्था की स्थापना इस दृष्टिकोण को केन्द्र में रखकर की थी कि उसके माध्यम से अनुशासित मानवीय मूल्यों से युक्त राष्ट्र के प्रति समर्पित प्रेम की भावना से पूर्ण छात्र–छात्राएँ शिक्षा प्राप्त करके निकलें, जो अपने परिवार, शाला एवं नगर का नाम रौशन कर सकें। उन्होंने न, केवल इस विद्यालय की स्थापना की, बल्कि एक सच्चे कर्मयोगी की भाँति अपने जीवन के अन्तिम क्षणों तक इस महान् कार्य में निस्वार्थ भाव से जुटे रहे।

डॉ. साहब ने अपने जीवन–काल में ही संस्था का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व एक ऐसे कर्त्तव्यनिष्ठ विशाल हृदय, संस्था के लिए समर्पित, दृढ़ इच्छाशक्ति से सम्पन्न कुशल प्रशासक के हाथों सौंपा कि आज नवांकुर विद्यालय डॉक्टर साहब की इच्छा के अनुकूल शिक्षा के क्षेत्र में सराहनीय कार्य कर रहा है। आज विद्यालय नगर का ही नहीं, जिले एवं प्रदेश में उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर है।

मैं ऐसे कुशल, ईमानदार कर्त्तव्यनिष्ठ प्राचार्य श्री शैलेन्द्र दीक्षित एवं प्रबुद्ध शाला परिवार को बधाई देता हूँ।

मैं उस महान् दिवंगत आत्मा की शान्ति हेतु परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ एवं निम्नलिखित शब्दों के साथ भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ :–

"समुन्दर में तूफाँ को किनारे भी मिलते हैं,
आदमी को जिन्दगी में सहारे भी मिलते हैं।
दुनिया में सबसे प्यारी है जिन्दगी,
पर कुछ लोग जिन्दगी से प्यारे भी मिलते हैं।

— **कान्तिभाई,** अध्यक्ष, नागरिक सेवा समिति, गंज बासौदा

स्व. श्री शिरढोणकर जी जीवन में संघर्ष की जीवंत परिभाषा थे। वे सतत् संघर्ष, उत्तरोत्तर प्रगति, नवाचार, सतत् विकास के विचारक, जीवन में निरन्तर प्रगतिशील रहने की प्रेरणा थे। ऐसी प्रेरणा का देवलोक–गमन अत्यन्त दुःखद है, परन्तु अटल सत्य यह है कि प्रेरणा सदैव जीवन्त एवं चिरायु रहती है एवं मार्गदर्शन करती रहती है। मुझे डॉक्टर साहब से बहुत कम आयु में जुड़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। ऐसा सुअवसर विरले ही लोगों को प्राप्त होता है। जीवन के प्रत्येक मुकाम पर सदैव प्रसन्नचित्त एवं संघर्षशील रहने की प्रेरणा देते रहे। मेरे व्यक्तिगत जीवन में कई बातें सीखने का अनुभव प्राप्त हुआ, उनमें सबसे निराला था, 'प्रत्येक सुबह नवीनता एवं विश्वास का उद्भव'। विश्वास शब्द का अर्थ समझने के लिए उनके शब्द सदैव ध्यान रहेंगे कि व्यक्ति पर किया गया विश्वास एक नयी संस्था एवं व्यक्तित्व को जन्म देता है।

विकसित समाज एवं नवपीढ़ी के विकास हेतु विश्वास का पौधा रोपित होना आवश्यक है। उन्होंने सदैव इस पौधे को रोपा एवं सिंचित किया अपने सत्कर्मों से, जिससे देश एवं समाज को प्रभावशील नेतृत्व दिया जा सके। उसका जीवन्त उदाहरण नवांकुर नामक वृक्ष से युवा उद्यमी नेतृत्व आप सभी के समक्ष है।

यह वृक्ष हमें चिरकाल तक प्रेरणा एवं नेतृत्व प्रदान करता रहेगा। ऐसा वृक्ष समय की समस्त कठिन परिस्थितियों के बाद भी जीवन को नयी उमंग एवं विरासत के रूप में देगा। उनके अनुसार नवीनता की परिभाषा "समाज को रूढ़िवादी एवं परम्परागत विचारों के द्वन्द्वसे दूर नवाचार की ओर ले जाने वाली रौशनी थी।

बासौदा जैसी छोटी जगह में 90 के दशक में कम्प्यूटर शिक्षा का शंखनाद कर लोगों में विकास–रूपी सोच की नयी रोशनी प्रदान की। आज इस भौतिकवादी एवं आर्थिक आडम्बरवादी विश्व में रहते हुए भी सदैव इस बुराई से संघर्ष के प्रतीक थे। शिक्षा की इस व्यावसायिकता से दूर शिक्षा को उसके सच्चे उद्देश्य तक पहुंचाने का लक्ष्य हमें सौंप गये। उनके इस संघर्ष को पूर्णता प्रदान करना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

— रोमल मरखेड़कर

नवांकुर के अब्दुल कलाम

शैलेन्द्र दीक्षित (प्राचार्य–नवांकुर)

किसी भी संस्कृति, समाज, नगर के विकास की गाथा उन व्यक्तियों द्वारा लिखी जाती है, जिनमें होती है – अद्वितीय दूरदृष्टि, अदम्य साहस, भविष्य की सोच और सपने देखने की मानसिकता।

गंजबासौदा की धरती भी ऐसे ही कुछ विरले व्यक्तियों की कर्मभूमि रही है, जिनके कृत्तित्व से यह धरा धन्य हो गयी।

ऐसा ही शिक्षा जगत में एक दैदीप्यमान सितारा, जिसकी आभा से यह नगर अब तक झिलमिला रहा था। देखते ही देखते सदा के लिए विलीन हो गया। बासौदा नगर के लिए एक अपूरणीय क्षति! 6 जुलाई, 2016 को दुःखद समाचार मिला कि शिक्षा का यह देवदूत अब हमारे बीच नहीं रहा। जिसने भी सुना, शोक में डूब गया।

डॉक्टर साहब! इन्हीं दो शब्दों में उनकी परिचयात्मक छवि समाहित है। इसी सम्बोधन से वे लोगों से प्यार, सम्मान और पहचान पाते रहे।

डॉ. विजय शिरढोणकर अभूतपूर्व प्रतिभा के धनी, सकारात्मक सोच, सदैव क्रियाशील, निरन्तर प्रगतिशील, नवाचारों के प्रणेता थे। ऐसे ही व्यक्तित्व का 'मानस–पुत्र' है–नवांकुर।

'नवांकुर' को आगे बनाये रखने और आगे बढ़ाने के लिए उन्होंने अपने व्यवसाय को भी तिलांजलि दे दी। क्लिनिक पर आने वाले मरीज भी समझ गये थे कि डॉ. साहब अब हमारा नहीं अशिक्षा और अज्ञानता का ही इलाज करेंगे, अब वे क्लिनिक पर नहीं 'नवांकुर' में ही मिलेंगे।

मैं विद्यालय में 8 अगस्त, 1983 को आया, सौभाग्य से मुझे डॉ. साहब का सान्निध्य व मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।
डॉ. साहब सदैव कहते थे, कुछ नया करने का प्रयास करो, चादर की सीमाओं में पैरों को सिकोड़ने की आवश्यकता नहीं, सपने देखो, उन्हें साकार करने के लिए अनवरत् प्रयास करते रहो।

1983 में माध्यमिक विभाग तक विद्यालय संचालित था। 1990 में हाईस्कूल की शुरूआत की गयी। 1996 हायर सेकेण्डरी...... सिलसिला चलता रहा, नये–नये प्रकल्प विद्यालय में जुड़ते रहे, डॉल्फिन, अंग्रेजी माध्यम विद्यालय, नवांकुर संगीत विद्यालय, नवांकुर स्कूल ऑफ कम्प्यूटर साइंस।

2003 में डॉ. साहब ने एक और आयाम जोड़ा, नवांकुर बहुउद्देशीय साख सहकारिता मर्यादित, कभी 10,000/–से आरम्भ होने वाली साख सहकारी समिति आज 2 करोड़ का लेन–देन कर रही है। इस समिति के प्रादुर्भाव ने तो नवांकुर में कार्यरत् सभी कर्मचारियों की जीवन–शैली ही बदल दी।

डॉ. साहब जैसा कहते थे वैसा स्वयं करके दिखाते थे, कम्प्यूटर ऑपरेटिंग, नेट ऑपरेटिंग, हिन्दी टायपिंग, ई–मेल आदि में डॉ. साहब को महारत हासिल थी।

डॉ. साहब की ही सोच का परिणाम है कि कभी झोपड़ी से आरम्भ होने वाले विद्यालय की 25 करोड़ की परिसम्पत्ति है। स्वयं का विशाल भवन, प्रांगण, प्रयोग–शालाएँ, सुसज्जित कक्ष सभी पर विद्यालय का स्वामित्व है।

डॉ. साहब ने सदैव आगे बढ़ना, सकारात्मक सोच रखना व व्यवस्था को विकेन्द्रित करना सिखाया। प्रसंग है–क्रमशः पत्रिका के रजत–जयन्ती विशेषांक में उनके फोटो छापने की बात आयी, तो उन्होंने दो टूक शब्दों में फोटो छापने का मना कर दिया और कहा 'नवांकुर एक संस्थान है, यहाँ किसी एक व्यक्ति को कोई विशेष स्थान नहीं है।' डॉ. साहब महत्त्वाकांक्षी नहीं थे।

आज समिति के समस्त प्रकल्प स्वतन्त्र प्रभार के रूप में योग्य व अनुभवी शिक्षकों, लोगों के नेतृत्व में संचालित हैं।
इस शहर को और क्या ?

- प्रथम कॉलोनी – 'विजय नगर कॉलोनी',

- प्रथम नर्सिंग होम — 'राजाबाई नर्सिंग होम',
- प्रथम कम्प्यूटर सेन्टर — 'युगबोध',
- विदिशा जिले में साक्षरता अभियान चलाया।
- प्रतिष्ठा के माध्यम से सिलाई प्रशिक्षण कार्यक्रम।
- प्रवहणी चेतना कार्यक्रम के अन्तर्गत भोपाल सम्भाग के 130 छात्रों द्वारा गंजबासौदा से भोपाल तक बेतवा के किनारे–किनारे ''बेतवा–यात्रा''।
- जलसंरक्षण के लिए 'पानी रोको अभियान'।

उपर्युक्त उल्लेख उनके कृतित्व की बानगी भर हैं।

वे नारे जो डॉ. साहब ने स्वयं दिये हैं–

1. अंग्रेजियत गद्दारी है।
2. गणतन्त्र में गण बड़ा है, तन्त्र नहीं।
3. सदा सच बोलो, झूठ से संघर्ष करो।
4. दुःख यहाँ इसलिए आम है, क्योंकि सुख का पट्टा कुछ खास लोगों के नाम है।
5. चले नवांकुर आगे–आगे।

हम यह भी कह सकते हैं कि नवांकुर डॉ. साहब का पर्याय है।

डॉ. साहब सदैव हमारे दिलों में रहेंगे व हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे, ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास है।

हमारे प्रेरणा पुरुष डॉ. साहब को शत्–शत् नमन!

अश्रुपूरित श्रद्धांजलि!

श्रद्धांजलि

डॉ. विजय शिरढोणकर मेरे लिए प्रेरणा के स्रोत रहे। उन्होंने हमेशा मुझे हिम्मत व हौसला दिया। कठिन परिस्थितियों में जीने की कला सिखायी। हमेशा प्रसन्नचित्त रहते थे। व्यवहार–कुशल थे। भगवान् उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे व उनके परिवार को सहन शक्ति दे। नवांकुर परिवार की ओर से पितृपुरुष को श्रद्धांजलि अर्पित है।

— कु. अरुणा शर्मा

प्रधानाचार्या–माध्यमिक विभाग

●●●

'डॉ. साहब' ने मुझे लोकतन्त्र की शक्ति से परिचित कराया। वे कहते थे कि 'गणतन्त्र में गण बड़ा है, तन्त्र नहीं'। इसलिए अपने कार्यों को अपनी ऊर्जा को जनता व समाज के उपयोगी कार्यों में लगाइये। जब आप समाज के प्रति अपने कर्त्तव्यों को समझने लगेंगे, प्रसिद्धि खुद–ब–खुद आपके पास चलकर आयेगी, परन्तु आपके कार्यों में सत्यता व ईमानदारी होनी चाहिये। वे कहते थे कि सपने देखो, बड़े–से–बड़े सपने देखो, क्योंकि यदि तुम स्वप्न देखना बन्द कर दोगे, तो जीवन में बड़ा करने के मानक खत्म हो जायेंगे और मानकों के अभाव में जीवन बेजान भार से बढ़कर कुछ नहीं। समय–नियोजन व कार्यशैली के मामलों में उनका, कोई तोड़ नहीं था। उन्होंने हमें सिखाया कि कुछ नया करो और ऐसा करने में मन में संशय और भय की स्थिति नहीं होनी चाहिये। जब निडर होकर सच्चे मन से कोई कार्य करोगे, रास्ते खुद–ब–खुद तुम्हें मंजिल की ओर उन्मुख करेंगे। आदरणीय 'डॉ.साहब' को मेरा शत्–शत् नमन!

— पहलवानसिंह राजपूत

●●●

मैं 'डॉक्टर साहब' से एक लम्बे अरसे से जुड़ा रहा। उनकी गजब की ब्रेन–पॉवर से मैं हतप्रभ था। मैंने कई बार डॉक्टर सा.को लिखते देखा, वे जब भी कोई लेख या बात लिखते थे, तो कभी उसे काटते नहीं थे। जैसा उनकी कलम ने लिख दिया, उन्हीं शब्दों के साथ आगे बढ़कर अपनी बात को पूरा करते थे। उनकी वैज्ञानिक सूझबूझ व तकनीक सोच ने मुझे भी तकनीक से जोड़े रखा। वे ज्ञानपुंज थे और मैं उनके सामने तिनका–मात्र नहीं। फिर भी मैं अपने–आपको खुशनसीब समझता हूँ कि ऐसे व्यक्तित्व के सान्निध्य में मुझे रहने का अवसर मिला। आदरणीय 'डॉ.साहब' को मेरी ओर से नमन्!

— अविनाश डोंगरे

परम श्रद्धेय डॉ. विजय शिरढोणकर जी को सादर सुमन अर्पित करते हुए अपने उस महत्त्वपूर्ण समय को याद करना चाहता हूँ। मैं 1 जुलाई, सन् 1991 में विद्यालय में आया था। मेरा सिलेक्शन बतौर अंग्रेजी शिक्षक के किया गया था। मैं तत्पश्चात् समय–समय पर आदरणीय डॉ. साहब से मिलता रहता था। विद्यालय में चलने वाली विभिन्न गतिविधियों में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा हूँ, जो परम आदरणीय डॉ. साहब के मार्गदर्शन में हुआ करती थीं। आदरणीय डॉ. विजय शिरढोणकर जी नवांकुर विद्यापीठ के अध्यक्ष थे, वे एक बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। मैंने उनके साथ ज्ञान–विज्ञान–साक्षरता–मिशन में काम किया था, जो विदिशा जिले के ग्रामीण अंचल में शिक्षा के प्रचार–प्रसार हेतु चलाया गया था। मैंने उनके मार्गदर्शन में ग्रामीण रोजगार गारण्टी–योजना के अन्तर्गत सिवनी मालवा तहसील के ग्रामीण क्षेत्रों में एक ट्रेनर के रूप में कार्य किया एवं छतरपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में ग्राम–सभाओं को आयोजित करने हेतु बतौर एक ट्रेनर का काम किया। इसी प्रकार बैरसिया तहसील में भी ग्रामीण क्षेत्रों में ग्रामीणजनों को ट्रेनिंग देने का काम किया। आदरणीय डॉ. साहब मेरे लिए पिता–तुल्य थे। जब कभी किसी बात से हम व्यथित हो जाते थे, तो वह हमेशा हमसे कहते थे – ''कि हमारा दिमाग इतना सस्ता नहीं है। हमें हमारे दिमाग का सही कार्यों में उपयोग करना है।'' वह वास्तव में एक युग–पुरुष थे, दूरगामी सोच वाले व्यक्ति थे। उनके वचन हमेशा हमें याद आते रहेंगे। वह हमेशा कहा करते थे कि ''सदा सच बोलो और झूठ से संघर्ष करो।'' इन्हीं सब यादों के साथ मैं पुनः आदरणीय डॉ. विजय शिरढोणकर जी को अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

– केशव लाहौरी

●●●

आदरणीय डॉ. साहब भले ही हमारे बीच नहीं हैं, परन्तु उनके आदर्श, उनकी दूरदर्शिता, उनकी सकारात्मक सोच, उनका अदम्य साहस हमेशा हमें प्रेरणा देता रहेगा। छोटा हो या बड़ा वे सभी की बातें ध्यान से सुनते थे। हमेशा नवाचार की बातें करते थे और दूसरों से भी नवाचार की अपेक्षा रखते थे।

उनका कहना था कि जब भी व्यक्ति कुछ नया करना या सोचना छोड़ देता है, वह बूढ़ा हो जाता है। व्यक्ति अवस्था से नहीं, विचारों से बूढ़ा होता है, इसलिये हमेशा स्वस्थ्य विचारों के विचारक बनो। वे कहते थे सच्ची लगन से ईमानदारी पूर्वक अपना कर्म करते जाओ, श्रम कभी बेकार नहीं जाता। उसके परिणाम जितने देर से मिलेंगे उतने ही सार्थक व स्थायी होंगे। आज नवांकुर जिन ऊँचाईयों पर है। उनकी नींव डॉ. साहब के विचारों पर टिकी है उनके साथ 30 वर्षों के अनुभव को कागज पर उतार पाना संभव नहीं है। मैं बस यहीं कहना चाहूँगा कि हमने ऐसी शख्शियत को खो दिया, जिसे अंधेरों में रोशनी ढूंढ़ना आता था, कच्ची मिट्टी से सुन्दर स्वरुप बनाना आता था, जिसे बंजर भूमि में फसल उगाना आता था। ऐसे महान विचारक आदर्शमयी व्यक्तित्व को मैं इन चंद शब्दों के साथ याद करता हूँ कि –

टूटने लगे हौसले, तो ये याद रखना,
बिना मेहनत के, तख्तों ताज नहीं मिलते।
ढूंढ़ लेते हैं, अंधेरों में मंजिल अपनी
क्योंकि जुगनू कभी रोशनी के मोहताज नहीं होते।

– रमेश शर्मा

प्राचार्य–डॉल्फिन स्कूल, बासौदा

●●●

वर्ष 1986 मैंने नवांकुर में शिक्षण–कार्य करने के लिए आवेदन किया, चयन होने के बाद मुझे शुल्क–काउण्टर पर कलेक्शन का कार्य दिया गया। मेरी रुचि गणित विषय पढ़ाने में थी, मेरे बहुत आग्रह करने पर एक पीरियड पढ़ाने व शेष समय शुल्क–काउण्टर पर बैठने के लिए निश्चित किया गया। कुछ माह यह कार्य करते रहने के बाद परिषद् की ओर से मुझे आदेश दिया गया कि मुझे नवांकुर विद्यालय का एकाउण्ट लिखना है। मैंने प्राचार्य महोदय से निवेदन किया कि मुझे एकाउण्ट लिखना नहीं आता है, न ही इससे पूर्व मैंने एकाउण्ट का कार्य किया है, तब मुझे बताया गया था कि यह आदेश अध्यक्ष महोदय (श्रद्धेय डॉक्टर साहब) का है। अतः, आप इस सम्बन्ध में उन्हीं से चर्चा करें। मैं विद्यालय से अपना कार्य समाप्त कर 5.00 बजे डॉक्टर साहब की क्लिनिक पर पहुँचा। मन में कुछ डर था कि पता नहीं, डॉक्टर साहब क्या कहेंगे। उन्होंने मुझे बैठने को कहा और बहुत सामान्य तरीके से मेरे कार्य की जानकारी ली, मुझे उनके बात करने के तरीके से ऐसा बिल्कुल नहीं लगा कि मैं विद्यालय के अध्यक्ष महोदय से चर्चा कर रहा हूँ। मैंने उन्हें अपनी समस्या बतायी कि मैंने कभी एकाउण्ट का कार्य नहीं किया। अतः, मैं एकाउण्ट नहीं लिख पाऊँगा। मेरी बात सुनने के बाद उन्होंने कहा मैं एम.बी.बी.एस. डॉक्टर हूँ। क्या आपको लगता है कि मुझे एकाउण्ट का कार्य करना आता होगा। मैंने कुछ झिझकते हुए कहा–नहीं! तब डॉक्टर साहब ने कहा, यह सही है कि पहले मुझे एकाउण्ट का काम नहीं आता था, लेकिन विद्यालय की आवश्यकता को समझते हुए मैंने एकाउण्ट का काम भी सीख लिया है; परन्तु क्लिनिक की अधिक व्यस्तता होने के कारण मैं इस काम को समय नहीं दे पा रहा हूं। मैं आपको एकाउण्ट का

काम सिखाऊँगा, उसके बाद मैं प्रतिदिन शाम को डॉक्टर साहब के क्लिनिक पहुँच जाता था। उन्होंने कुछ दिन साथ बिठाकर एकाउण्ट का कार्य सिखाया।

श्रद्धेय डॉक्टर साहब जी में विद्यालय के प्रति समर्पण की भावना थी। डॉ. साहब सदैव कहते थे, कुछ नया करो।

– ओमप्रकाश श्रीवास्तव

मन आज भी कह रहा है कि आप गये नहीं, हमारे मन के अंतस तक आपके विचार आज गहरी जगह बना चुके हैं। आपके द्वारा दी गयी सलाह हमारा उद्देश्य बन गयी, जो मन को आनन्दित करती रही। जीवन की एक राह मेरे मन को मार्ग प्रदान कर गयी, जो आपके द्वारा मेरे जीवन में सम्भव था। आपका एक विचार किसी व्यक्ति की जिन्दगी बदलने की ताकत रखता है। ऐसे हमारे अध्यक्ष महोदय हमारे बीच नहीं हैं। आपकी सहजता, सोच, आपके विचार, अनुशासन, पराक्रम, स्वच्छ दृष्टिकोण व्यावहारिकता ये सारे विचार एक व्यक्तित्व में मिल पाना सहज नहीं था। मैं अध्यक्ष महोदय (काका) को ये विचार–पुष्प सादर अश्रुपूर्ण समर्पित करता हूँ।

– मनोज देशपाण्डे, लेखापाल

●●●

समय

एक बार डॉ. साहब ने मीटिंग में हमें समय का विशेष ध्यान रखने पर जोर दिया था, जो सत्य भी है। समय का पालन कर हम अपने व देश के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

जैसे ही हमारे पास किसी आयोजन का निमन्त्रण–पत्र आता है, तो हम उसमें स्थान व समय देखते हैं और कार्ड में दिये गये समय से कम–से–कम एक घण्टा देर से पहुँचने का मन बना लेते हैं।

इसी तरह आयोजक भी इस बात को मानकर कि लोग एक घण्टा लेट आयेंगे, कार्यक्रम की तैयारी करता है।

अब इन आँकड़ों पर गौर करते हैं, भारत की जनसंख्या लगभग सवा अरब है, प्रत्येक व्यक्ति यदि अपने कार्य से 1 मिनट भी लेट होता है, तो सवा अरब लोगों का एक मिनट लगभग 237 वर्ष का समय होता है। मतलब प्रत्येक व्यक्ति यदि एक मिनिट लेट होता है तो उन मिनिटों के 237 वर्ष होते हैं।

हम सभी विकसित देशों से लगभग 200 वर्ष पीछे हैं। कहीं समय का पालन न करना ही इसका कारण तो नहीं? सभी

वो दिन वो खुशियों के समा याद रहेंगे, वो संघर्ष वो सफलताओं के मकाम याद रहेंगे। हम भूल सके हैं, न आपको भूल सकेंगे, आप याद हैं हमें और हमेशा याद रहेंगे।

हमारे समाज में जब–जब व्यक्ति ने व्यक्तिगत हितों के स्थान पर समाज के मंगल को केन्द्र में रखकर कार्य किया है, तब–तब व्यक्ति हमेशा के लिए न केवल श्रद्धा के पात्र बने, बल्कि आने वाली पीढ़ी के लिए समाजसेवा के क्षेत्र में प्रेरणा स्रोत और मील का पत्थर भी बन गये। गंजबासौदा के जनमानस में जाने–माने 'मील के पत्थर' का नाम है–'डॉ. विजय शिरढोणकर जी', जो मन से निर्मल, वाणी से स्पष्टवादी और कर्म से दृढ़ निश्चयी थे तथा विश्वसनीयता का दूसरा नाम थे। निर्धन छात्रों की सहायता, शिक्षा एवं विकास के लिए अनेक कार्य किये। निर्धन छात्रों की शिक्षा, गरीबों के प्रति सेवाभाव और परोपकार डॉ. साहब में कूट–कूट कर भरा था। डॉ. साहब गुणों की साकार मूर्ति थे। इन गुणों के कारण वे सभी वर्ग के लोगों में सामान्य से लोकप्रिय हो गये। शिक्षा के क्षेत्र में डॉ. साहब का बासौदा नगर के लिए अविस्मरणीय योगदान रहा है। आपने शिक्षा जगत में ही नहीं बल्कि नगर के विकास में भी सहृदयता से सहयोग दिया। डॉ. साहब का स्नेह एवं मार्गदर्शन संस्था पर निरन्तर रहा। आज डॉ. साहब हमारे बीच नहीं हैं, किन्तु उनके द्वारा शिक्षा एवं जनकल्याण की दृष्टि से किये प्रेरणा कार्य हमारे बीच हैं। वे हमेशा हमारे लिए प्रेरणा स्रोत बने रहेंगे। आपको संस्था स्मरण कर गौरवान्वित अनुभव करती है। हम ऐसे महापुरुष को हमेशा स्मरण करते हुए उन्हें शत्–शत् नमन करते हैं।

आपसे मिला हुआ स्नेह धनसदैव सहज कर रखेंगे।
कठिन मार्ग कभी नहीं हुए आपके लिए समस्या,
आप रहते थे बिल्कुल सहज,
अब विदित हुआ कि आप समाजसेवा
और शिक्षा के क्षेत्र में
कर रहे थे तपस्या।
आपके पदचिन्हों पर रहेंगे सदा हम अग्रसर
अपने पथ पर अडिग रहेंगे, इसका साक्षी है ईश्वर।
शत्–शत् बार प्रणाम हम करते हैं आपको,
यह छोटी–सी श्रद्धांजलि, हम भेंट करते हैं आपको।

– कु. प्रीति चतुर्वेदी,
व्याख्याता–नवांकुर उ.मा.वि.

स्वर्गीय डॉ. विजय शिरढोणकर जी को अर्पित श्रद्धा सुमन

हार्दिक श्रद्धांजलि

एक डॉक्टर की है ये कहानी।
लगा दी दाँव पे सारी जिन्दगानी।
अनपढ़ ना रह पाये अब कोई,
इसीलिए छोड़ी 'नवांकुर'–रूपी ये निशानी।
जाने से उनके आ गयी चमन पे खिजाँ।
पर छोड़ गये हैं वो ऐसे हसीन निशाँ।
'नवांकुर' में ऐसे रचे बसे हैं वो,
महकता रहेगा, हरदम ये प्यारा गुलसिताँ।
चले नवांकुर आगे–आगे का देकर नारा।
गुँजा दिया ऊँचाई तक इतना आसमाँ सारा।
हम ही क्या, अब तो सब ही कहेंगे,
सारे जहाँ से अच्छा 'नवांकुर' हमारा।
नाम के अनुरूप सदा रहे,
'विजय–पथ' पर अग्रसर।
चिकित्सा का क्षेत्र छोड़कर,
पकड़ ली शिक्षा की डगर।
गंजबासौदा का नाम किया,
उज्ज्वल पूरे जिले में,
बासौदावासियों के हृदय में,
रहेंगे सदा होकर अमर।

— शैलेन्द्र कुमार पिंगले 'सुमन'

उस विलक्षण दिवंगत आत्मा को, कोटि–कोटि नमन।।
जिस दिशा में भी कदम बढ़ाया,
वहाँ विजय का परचम लहराया।
ऊँचाइयों के शिखर पर पहुँचकर,
अपना नाम सार्थक कर दिखाया।
उपलब्धियाँ बहुत हैं, शब्द कम,
कैसे करें हम आपका अभिनन्दन,
उस विलक्षण दिवंगत आत्मा को, कोटि–कोटि नमन।।
नवांकुर चले आगे–आगे
इसी में प्रयासरत होकर भागे।
खेलकूद–शिक्षण या हो तकनीक,
सभी में अटूट रहे आपके धागे।
नवांकुर बना सफलतम विद्यालय,
कारण बना सिर्फ आपका मार्गदर्शन।
उस विलक्षण दिवंगत आत्मा को, कोटि–कोटि नमन।
यूँ तो है आधुनिक समाज भी,
व कई सतत् प्रयासों के बाद भी।
बेटा है बेटी से बढ़कर,
यह कुप्रथा बनी हुई है आज भी।
इस कुप्रथा से ऊपर उठकर
दिया अपनी बेटियों को उच्च शिक्षण।
उस विलक्षण दिवंगत आत्मा को, कोटि–कोटि नमन।

— नीतेश सूर्यवंशी

संगीत विद्यालय-लोकार्पण समारोह
रजत जयंती पर्व

संगीत विद्यालय-लोकार्पण समारोह
रजत जयंती पर्व
1978 2003

संगीत विद्यालय-लोकार्पण समारोह

संगीत विद्यालय-लोकार्पण समारोह

जयंती पर्व
नवांकुर

शिक्षक अभिनंदन समारोह
रजत जयंती पर्व

गणतंत्र में "गण" बड़ा है, तंत्र नहीं

गणतंत्र में "गण" बड़ा है, तंत्र नहीं

नवांकुर
रजत जयंती समारोह
1978 - 2003
जिला स्तरीय शालेय वाद-विवाद प्रतियोगिता

रजत जयंती पर्व
1978 - 2003

स्कूल इन्फो

नवांकुर के 24 छात्रों ने हा.से. परीक्षा मे 85 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किये

माध्यमिक शिक्षा मण्डल म.प्र., भोपाल द्वारा आयोजित हायर सेकेण्डरी की परीक्षा में नवांकुर विद्यापीठ के 209 विद्यार्थी सम्मिलित हुए, जिनमें से 152 विद्यार्थी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। इन विद्यार्थियों में से 24 विद्यार्थियों ने 85 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त करके म.प्र.शासन के प्रतिभाशाली छात्र प्रोत्साहन योजना के अन्तर्गत 25 हजार रुपये की राशि प्राप्त करने की पात्रता हासिल कर ली है।

उल्लेखनीय है कि प्रदेश के मुख्यमन्त्री माननीय श्री शिवराजसिंह जी चौहान की घोषणा के अनुसार हायर सेकेण्डरी परीक्षा में नियमित विद्यार्थी के रूप में 85 प्रतिशत या उससे अधिक प्राप्त करने वाले छात्र/छात्राओं को लेपटॉप क्रय करने के लिए सरकार द्वारा प्रतिवर्ष 25–25 हजार रुपये की प्रोत्साहन–राशि पुरस्कार के रूप में प्रदान की जाती है।

विद्यालय के 85 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र/छात्राओं के नाम इस प्रकार हैं – कु. शालिनी रघुवंशी पुत्री श्री ज्ञानसिंह 92.8%, कु. क्षमा राय पुत्री श्री सन्तोषकुमार 92.6%, कु. शिवानी राय पुत्री श्री विनोद राय 91.6%, कु. सेजल जैन पुत्री श्री सनतकुमार 90.8%, अमित रघुवंशी पुत्री श्री दीपक रघुवंशी 90.4%, अनिकेश दुबे पुत्र श्री मनीष दुबे 90.2%, कु. विशाखा जैन पुत्री श्री केवलचंद्र 89.6%, आदित्य प्रजापति पुत्र श्री तेजवीरसिंह 89%, सौरभ जैन पुत्र श्री कैलाशचंद 88.4%, रवि चौकसे पुत्र श्री राजकुमार 87.4%, कु. श्रद्धा ठाकुर पुत्री श्री देवेन्द्रसिंह 87%, कु. दीक्षा दांगी पुत्री श्री सुरेन्द्रसिंह 86.8%, कु. कामिनी रघुवंशी पुत्री श्री रघुवरसिंह 86.6%, प्रदीपसिंह रघुवंशी पुत्र श्री चन्द्रगोपाल 86.2%, पवन दाँगी पुत्र श्री कल्याणसिंह 85.8%,, कु. कंचन दांगी पुत्री श्री रामबाबू 85.6%, कु. अपूर्वा दाँगी पुत्री श्री धर्मेन्द्र दाँगी 85.4%, प्रशान्त भावसार पुत्र श्री राजेश भावसार 85.4%, कु. मोनिका बघेल पुत्री श्री सुन्दरसिंह 85.4%, कु. सोनम बघेल पुत्री श्री मोतीसिंह 85.2%, कु. नन्दिनी दुबे पुत्री श्री विष्णु दुबे 85%, प्रवेन्द्र राजपूत पुत्र श्री रामबाबू 87%, कु. कृतिका चौधरी पुत्री श्री राजेशकुमार 85%, ।

गौरतलब है कि सत्र 2013–14 में नवांकुर विद्यापीठ के जिले में सर्वाधिक 18 विद्यार्थी तथा 2014–15 में भी जिले में सर्वाधिक 22 विद्यार्थी यह पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं। विद्यालय–परिवार ने इस उपलब्धि पर सभी विद्यार्थियों एवं उनके अभिभावकों को शुभकामनाएँ दी हैं।

हायर सेकेण्डरी परीक्षा परिणाम वर्ष 2015–16

संकाय	कुल	प्रथम श्रेणी	द्वितीय श्रेणी	पूरक	अनुत्तीर्ण	प्रतिशत
गणित	112	81	19	7	5	89.25%
वाणिज्य	53	48	5	–	–	100%
जीवविज्ञान	44	23	11	6	4	77%

कक्षा 12 गणित संकाय	कु. क्षमा राय	पुत्री श्री सन्तोषकुमार राय	463	92.6%
	कु. शिवानी राय	पुत्री श्री विनोद राय	458	91.6%
	अमित रघुवंशी	पुत्र श्री दीपक रघुवंशी	452	90.4%
कक्षा 12 जीवविज्ञान संकाय	कु. शालिनी रघुवंशी	पुत्री श्री ज्ञानसिंह रघुवंशी	464	92.8%
	कु. दीक्षा दांगी	पुत्री श्री सुरेन्द्रसिंह	434	86.8%
	कु. दीपल रघुवंशी	पुत्री श्री बृजेन्द्रसिंह रघुवंशी	418	83.6%
कक्षा 12 वाणिज्य संकाय	कु. सेजल जैन	पुत्री श्री सनतकुमार जैन	454	90.8%
	कु. विशाखा जैन	पुत्री श्री केवलचन्द्र जैन	448	89.6%
	कु. श्रद्धा ठाकुर	पुत्री श्री देवेन्द्रसिंह	435	87.0%

सोनम रघुवंशी 93.6% अंक प्राप्त करके नवांकुर में प्रथम

माध्यमिक शिक्षा मण्डल म0प्र0, भोपाल द्वारा आयोजित हाईस्कूल–2016 की परीक्षा में नवांकुर विद्यापीठ के छात्र/छात्राओं ने उच्चतम अंक प्राप्त करके अपने अभिभावकों, विद्यालय और नगर को गौरवान्वित किया। इस परीक्षा में नवांकुर के कुल 251 छात्र सम्मिलित हुए, जिनमें से 175 छात्र प्रथम श्रेणी में और 56 छात्र द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। कुल परीक्षा–परिणाम 92.43% रहा। विद्यालय के लिए बड़े गौरव का विषय है कि 34 छात्र/छात्राओं ने 85% से अधिक अंक प्राप्त किये।

विद्यालय की छात्रा कु. सोनम रघुवंशी पुत्री श्री नारायणसिंह रघुवंशी ने 600 में से 562 अंक 93.6% अंक प्राप्त करके विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसी प्रकार कु. चंचल दुबे पुत्री श्री गजानन दुबे ने 93% द्वितीय तथा कु. रक्षा रघुवंशी पुत्री श्री रामकृष्ण रघुवंशी ने 91.5% तृतीय स्थान प्राप्त किया।

डॉल्फिन विद्यालय के कुल 30 विद्यार्थियों में से 28 प्रथम श्रेणी में और दो विद्यार्थी द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। विद्यालय का परीक्षा परिणाम 100% रहा। विद्यालय की छात्रा कु. साक्षी राय पुत्री श्री अनिल राय 600 में से 549 अंक (91.5%) अंक प्राप्त करके प्रथम स्थान प्राप्त किया। वहीं कु. प्रज्ञा राजपूत पुत्री श्री ब्रज राजपूत (91.3%) ने द्वितीय तथा अनिरुद्ध शर्मा पुत्र श्री मनोज कुमार शर्मा ने (91.1%) अंक प्राप्त करके विद्यालय में तृतीय स्थान प्राप्त किया।

छात्रों की सफलता पर नवांकुर एवं डॉल्फिन विद्यालय–परिवार में हर्ष एवं उत्साह का माहौल है। विद्यालय परिवार ने छात्रों व उनके अभिभावकों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।

मित्र योजना के अन्तर्गत विद्यालय के निर्धन विद्यार्थियों को स्कूल सामग्री प्रदान की गई

समाजसेवी कान्तिभाई ने नवांकुर के निर्धन छात्रों की सहायतार्थ दी 20 हजार रुपये की राशि

दिनांक 21.07.2016 को नागरिक सेवा समिति के अध्यक्ष माननीय श्री कान्तिभाई जी शाह ने नवांकुर विद्यालय में उपस्थित होकर 20 हजार रुपये की राशि का चैक निर्धन छात्रों की सहायतार्थ विद्यालय के प्राचार्य श्री शैलेन्द्र जी दीक्षित को प्रदान किया। इस राशि से विद्यालय के जरुरतमंद निर्धन छात्र/छात्राओं को गणवेश, पाठ्य पुस्तकें, स्कूल बैग, जूते आदि वस्तुएँ प्रदान की जायेंगी। इस अवसर पर नागरिक–सेवा–समिति के उपाध्यक्ष श्री सुरेश तनवानी, कोषाध्यक्ष श्री शम्भूदयाल जी शर्मा, श्री तेजनारायण श्रीवास्तव, श्री नाटू भाई, श्री बाबूभाई पिंगले, प्रसिद्ध दन्त–चिकित्सक श्री सौरभ जैन तथा सम्पूर्ण नवांकुर–परिवार के सदस्य भी उपस्थित थे। उल्लेखनीय है कि समाजसेवी कान्तिभाई जी शाह, जो समाज–सेवा के कार्यों में हमेशा तत्पर रहते हैं, राष्ट्रीय–सेवा–योजना के कार्यों में भी इनकी अहम भागीदारी रहती है। पूर्व में भी आप 40 हजार रुपये की राशि ग्राम बेंहटा में शौचालय–निर्माण के लिए प्रदान कर चुके हैं तथा आपने घोषणा की है कि निर्धन छात्र/छात्राओं की अध्ययन–सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आगे भी मदद करते रहेंगे। इस अवसर पर विद्यालय के रासेयो–प्रभारी श्री शम्भूसिंह रघुवंशी ने श्री कान्तिभाई द्वारा समय–समय पर रासेयो के माध्यम से किये गये समाजसेवा के कार्यों पर प्रकाश डाला। विद्यालय के प्राचार्य श्री शैलेन्द्र कुमार दीक्षित जी ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। सन्दीप रावत ने कार्यक्रम का संचालन किया। विद्यालय के कोषाध्यक्ष श्री पहलवानसिंह राजपूत ने सभी अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

नवांकुर संगीत-विद्यालय में संगीत परीक्षा सम्पन्न

विगत दिनों नवांकुर संगीत विद्यालय में क्रियात्मक परीक्षा सम्पन्न हुई, जिसमें नवांकुर संगीत विद्यालय के 108 छात्र/छात्राओं ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। उक्त परीक्षा उज्जैन से पधारे श्री विशाल शिन्दे के द्वारा सम्पन्न करायी गयी।

प्रथम वर्ष के छात्रों ने राग यमन, भूपाली विहाग, खमाज एवं भैरव की आकर्षक बन्दिशें छोटे ख्याल में प्रस्तुत की। द्वितीय वर्ष के छात्रों ने राग आसावरी में बड़ा ख्याल, राग वृन्दावनी सारंग में ध्रुपद एवं भैरवी, भीमपलासी, दुर्गा एवं देस में छोटे ख्याल की प्रस्तुतियाँ देकर तान व आलाप में आनन्द बरसा दिया। तृतीय वर्ष के छात्रों ने राग मालकोस एवं केदार में बड़ा व छोटा ख्याल एवं तराना के साथ राग हमीर, जौनपुरी, पीलू एवं कालिंगड़ा में छोटा ख्याल तान व आलाप सहित सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया। चतुर्थ, पंचम एवं प्रभाकर के छात्रों द्वारा राग जय–जयवन्ती, दैसकार में बड़ा ख्याल, ध्रुपद एवं धमार, राग दरबारी में बड़ा ख्याल, ध्रुपद एवं राग जय–जयवन्ती में धमार एवं अन्य रागों छोटा ख्याल तथा राग रागेश्वरी, देसी मिया मल्हार में बड़ा व छोटा ख्याल, ध्रुपद धमार एवं अन्य रागों में छोटा ख्याल ठुमरी, गजल, भजन एवं गीतों का सुन्दर व आकर्षक प्रस्तुतिकरण किया। तबला वादन में प्रथम वर्ष से तृतीय वर्ष के छात्रों ने ताल तीन ताल, झप ताल एवं एक ताल में पेशकारा, परण एवं टुकड़े के साथ कायदा एवं पलटे की सुन्दर प्रस्तुतियाँ दी। चतुर्थ पंचम एवं प्रभाकर के छात्रों ने झपताल, एकताल, चौताल, दीपचन्दी, आड़ा चौताल में परण, पेशकारा टुकड़े के साथ कायदा एवं पलटे की शानदार सफाई के साथ तबला–वादन किया।

उल्लेखनीय है कि विगत 13 वर्षों से नवांकुर संगीत–विद्यालय नगर में संचालित है, जिसमें न केवल नवांकुर के विद्यार्थी अपितु अन्य शैक्षणिक संस्थाओं के विद्यार्थी संगीत–शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। प्रतिवर्ष ग्रीष्मकाल में प्रातः 8 से 11 बजे तक एवं अन्य दिनों में सायं 5 से 7 बजे तक संगीत की विशेष कक्षाएँ लगायी जाती हैं। यह विद्यालय प्रयाग संगीत समिति इलाहाबाद से संबद्ध है। संगीत विद्यालय के आचार्यगण रामकिशन राठौर, शैलेन्द्र कुमार पिंगले, मुकेश शर्मा, तथा कु. वन्दना भार्गव ने अपना सहयोग प्रदान किया।

कालिदास समारोह में नवांकुर एवं डॉल्फिन के प्रतियोगियों की प्रस्तुति

म.प्र.शासन की इंस्पायर अवार्ड योजना में नवांकुर की छात्रा विज्ञान मॉडल प्रस्तुत करते हुए

स्वतन्त्रता दिवस पर पुरस्कार वितरण सम्पन्न

नवांकुर विद्यापीठ में स्वतन्त्रता दिवस की 70वीं वर्षगांठ धूमधाम से मनाई गई। कार्यक्रम के प्रारम्भ में प्राचार्य श्री शैलेन्द्र दीक्षित द्वारा ध्वजारोहण किया गया। राष्ट्रगान के पश्चात् मध्यप्रदेश गान का सामूहिक रुप से गायन किया गया। तत्पश्चात् प्राथमिक, माध्यमिक एवं उ.मा.वि. के छात्र–छात्राओं ने रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किये। उपस्थित दर्शकों द्वारा जिसकी भरपूर सराहना की गई।

इस अवसर पर कक्षा 8 में 99.59 प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाली छात्रा कु. मुस्कान ठाकुर पुत्री श्री बाबूसिंह ठाकुर तथा कक्षा–10 में 93.6 प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाली कु. सोनम रघुवंशी पुत्री श्री नारायणसिंह रघुवंशी को श्रद्धा पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। उल्लेखनीय है कि यह पुरस्कार विद्यालय के अध्यक्ष स्व. डॉ. विजय शिरढोणकर की पुत्री श्रीमती श्रद्धा टिल्लू द्वारा कक्षा–8 एवं कक्षा–10 में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली छात्राओं को प्रदान किया जाता है। इसके अन्तर्गत 2000/– रुपये की नगद राशि प्रदान की जाती है।

इसी प्रकार विद्यालय की शिक्षिका श्रीमती रेणु श्रीवास्तव द्वारा कु. सोनम रघुवंशी को कक्षा–10 में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर 1100/– रुपये का नकद शिरोमणि–पुरस्कार प्रदान किया गया। यह पुरस्कार उनकी सासू माँ की स्मृति में प्रदान किया जाता है।

नवांकुर स्कूल ऑफ कम्प्यूटर साईंस डी.सी.ए. की छात्रा कु. रिंकी दाँगी, कु. उमा दाँगी, कु. प्रीति राजपूत तथा पी.जी.डी.सी.ए. की छात्रा कु. दीपाली दुबे, कु. सुरभि जैन तथा कु. नंदिनी कुशवाह को 2016 की परीक्षा में उत्कृष्ट अंक अर्जित करने पर शील्ड एवं प्रमाण–पत्र देकर सम्मानित किया गया।

स्काउट दल ने बैण्ड धुन पर सभी प्रतिभागी छात्र–छात्राओं का उत्साहवर्द्धन किया। विद्यालय के शिक्षक संदीप रावत ने कार्यक्रम का संचालन किया। अंत में मिष्ठान वितरण के पश्चात् कार्यक्रम का समापन किया गया।

नवांकुर के विद्यार्थी खेलों में राज्य स्तर पर चयनित

नवांकुर विद्यापीठ में जिला स्तरीय योग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें नवांकुर व डॉल्फिन के 12 छात्रों ने सम्भाग स्तरीय योग प्रतियोगिता के लिए पात्रता हासिल की है। चयनित विद्यार्थियों के नाम हैं – विकास दुबे, कक्षा–12, विशाल रघुवंशी, कक्षा–11, मोना दाँगी, कक्षा–11, दीक्षा राजपूत, कक्षा–12, अंजलि नामदेव, कक्षा–11, आयुषी समैया, कक्षा–12, तिथि राजपूत, कक्षा–8, कशिश अहिरवार, कक्षा–7।

इसी प्रकार सम्भाग स्तरीय शतरंज प्रतियोगिता में डॉल्फिन स्कूल की छात्रा कु. श्रेयाा शिरढोणकर, कक्षा–10 तथा आयुष राय, कक्षा–9 का चयन राज्य स्तरीय शतरंज प्रतियोगिता लिए किया गया है।

भोपाल में आयोजित रायफल शूटिंग सम्भाग स्तरीय प्रतियोगिता में डॉल्फिन स्कूल के छात्र हर्षित सिकरवार, कक्षा–9 और तनु शर्मा, कक्षा–7 का चयन राज्य स्तर के लिए किया गया हैं। यह प्रतियोगिता 1 सितम्बर से इन्दौर में आयोजित की जावेगी।

स्कॉलर पब्लिक स्कूल, सदाशिव नारायण राव स्मृति संस्थान द्वारा नवांकुर के पी.टी.आई. श्री विजय शर्मा को पुरस्कृत किया गया

नगर के दशहरा उत्सव पर श्री हिन्दु उत्सव समिति द्वारा नवांकुर विद्यालय सम्मानित

नवांकुर के छात्र मयंक भार्गव सुरश्री एकल गायन प्रतियोगिता के फायनल में

रोटरी क्लब भोपाल हिल्स द्वारा आयोजित सुर श्री मध्यप्रदेश एकल गायन प्रतियोगिता के सेमी फायनल में शानदार प्रस्तुति देकर नवांकुर के छात्र मयंक भार्गव ने फायनल राउण्ड के लिये जगह पक्की कर ली।

प्रतियोगिता का प्रथम राउण्ड जिला स्तर पर सम्पन्न हुआ। विदिशा में सम्पन्न प्रथम राउण्ड में 75 प्रतिभागियों में से 8 प्रतिभागियों का चयन द्वितीय राउण्ड के लिये किया गया। द्वितीय तथा तृतीय राउण्ड भोपाल में सम्पन्न हुआ जहाँ से 12 छात्र/छात्राओं का चयन फायनल राउण्ड के लिये किया गया।

फायनल राउण्ड का आयोजन 6 नवंबर को भोपाल में किया गया। जहाँ अतिथि के रूप में प्रसिद्ध पार्श्व गायिका महालक्ष्मी अय्यर, म्यूजिक डायरेक्टर ललित पण्डित व संजीव सचदेवा उपस्थित थे। इस प्रतियोगिता में मयंक को फायनल राउण्ड सांत्वना पुरस्कार के रूप में ट्राफी व 5001/– रुपये प्रदान किये गये। विद्यालय परिवार ने छात्र मयंक भार्गव को बधाई देकर उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।

रैली में नवांकुर ने प्रथम स्थान प्राप्त किया

गाँधी जयंती के उपलक्ष्य में सकल जैन समाज, गंजबासौदा के तत्वावधान में नगर में स्वच्छता एवं अहिंसा संदेश देने के लिये गाँधी चौक से नेहरु चौक तक विद्यालयीन छात्र/छात्राओं की एक विशाल रैली का आयोजन किया गया। जिसमें नगर के सभी विद्यालयों ने भाग लिया। इस रैली में नवांकुर विद्यालय व डॉल्फिन स्कूल के लगभग 250 छात्र/छात्राओं ने भाग लिया जिसमें रासेयो तथा स्काउद दल के छात्र भी सम्मिलित थे। नवांकुर के छात्र/छात्राओं की श्रेष्ठ रैली, उत्तम स्काउट बैण्ड दल एवं अनुशासन का उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के कारण विद्यालय को प्रथम पुरस्कार के रूप में शील्ड व प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।

नवांकुर में विज्ञान प्रदर्शनी आयोजित

दिनांक 14.10.16 को नवांकुर विद्यापीठ में विज्ञान मॉडल प्रदर्शन का आयोजन किया गया। जिसमें कक्षा–6 से कक्षा–11 तक के छात्र/छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस मॉडल प्रदर्शनी में 250 मॉडलों का प्रदर्शन किया गया।

इस प्रदर्शनी में मॉडल बननो के लिए छात्र/छात्राओं को पाँच विषय दिये गये थे। जिसमें से किसी भी विषय पर छात्रों को अपने मॉडल का प्रदर्शन करना था। ये विषय इस प्रकार हैं – स्वच्छ भारत–स्वस्थ्य भारत, डिजिटल इण्डिया, ग्रीन एनर्जी, मेक–इन–इण्डिया, खाद्य श्रृंखला एवं पोषण। इस मॉडल प्रदर्शनी में छात्र/छात्राओं ने सफाई व्यवस्था, शौचालय व्यवस्था, पन चक्की, पवन ऊर्जा, सौर ऊर्जा, विद्युत उत्पादन, सोलर कुककर, भारत–पाक सीमा सुरक्षा सम्बन्धी आदि विषयों पर एक से बढ़कर एक उत्कृष्ट मॉडलों का प्रदर्शन किया। उत्कृष्ट मॉडल विकासखण्ड स्तरीय प्रतियोगिता में सम्मिलित होंगे।

इन मॉडलों का उद्देश्य स्वच्छता का सन्देश देना, तकनीक का प्रयोग, नवीनीकरण साधनों का प्रयोग, ऐतिहासिक स्थलों का उचित रख–रखाव आदि हैं।

विद्यालय परिवार के शिक्षक–शिक्षिकाओं ने मॉडल बनाने वाले छात्र/छात्राओं की भूरि–भूरि प्रशंसा करते हुए उन्हें बधाई और शुभकामनाएँ दी हैं।

राज्य स्तरीय योग प्रतियोगिता के लिये नवांकुर/डॉल्फिन के 4 छात्र चयनित

भोपाल में आयोजित सम्भाग स्तरीय योग प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन के आधार पर नवांकुर / डॉल्फिन के 4 छात्रों का चयन राज्य प्रतियोगिता के लिए किया गया है। इन छात्र/छात्राओं के नाम हैं – विकास दुबे, कक्षा–12, विशाल रघुवंशी, कक्षा–11, कु. मोना दाँगी, कक्षा–11, डॉल्फिन की कु. निर्वानिका नामदेव, कक्षा–7। राज्य स्तरीय प्रतियोगिता का आयोजन भोपाल में किया जायेगा।

रायफल शूटिंग में तनु शर्मा राष्ट्रीय स्तर के लिये चयनित

डॉल्फिन की छात्रा कु. तनु शर्मा, कक्षा–7 का चयन नवम्बर माह में मुम्बई में होने वाली राष्ट्रीय स्तर की रायफल शूटिंग प्रतियोगिता के लिये किया गया है। कु. तुन ने इन्दौर में आयोजित राज्य स्तरीय रायफल शूटिंग प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया, जिसके आधार पर उसका चयन राष्ट्रीय प्रतियोगिता के लिये किया गया।

विद्यालय परिवार ने छात्र/छात्राओं को बधाई और शुभकामनाएँ दी हैं।

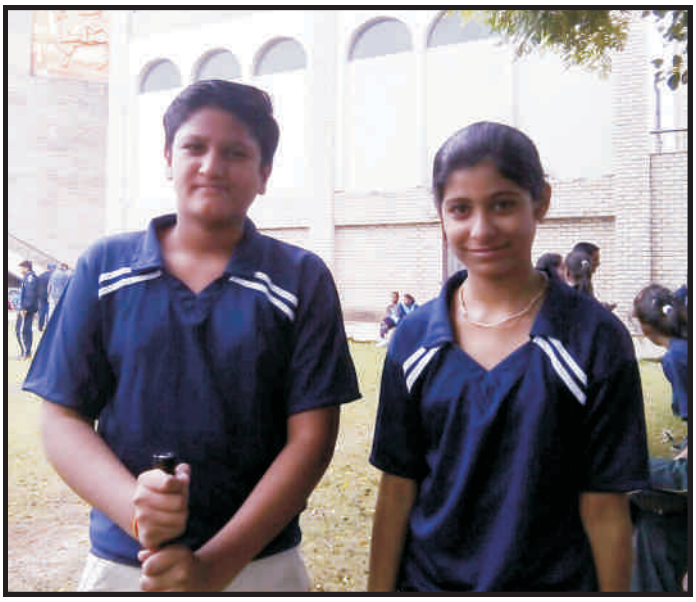

डॉल्फिन के मोगली करेंगे पेंच अभ्यारण्य की यात्रा

जिला स्तरीय मोगली उत्सव–2016 के अन्तर्गत विदिशा में प्रश्न मंच का आयोजन किया गया। जिसमें ब्लॉक स्तर पर चयनित सभी विद्यालयीन टीमों ने अपनी भागीदारी की। यह प्रतियोगिता कनिष्ठ और वरिष्ठ दोनों ही स्तर पर आयोजित की गई। उल्लेखनीय है कि दोनों ही स्तर पर नवांकुर के होनहार विद्यार्थियों अपनी उत्कृष्ट भागीदारी देते हुए प्रथम स्थान प्राप्त किया। कनिष्ठ और वरिष्ठ दोनों स्तर की टीमों में 4 विद्यार्थी चयनित हुए। जिसमें से 3 विद्यार्थी डॉल्फिन स्कूल के जबकि 1 विद्यार्थी शास. मॉडल हायर सेकेण्डरी स्कूल बासौदा से चयनित हुआ। वरिष्ठ वर्ग की विजय टीम में प्रियांश श्रीवास्तव पुत्र श्री मुकेश श्रीवास्तव (डॉल्फिन) व शेख रमीम पुत्र शेख साविर (शा. मॉडल हा.से. स्कूल बासौदा) से सम्मिलित थे। जबकि कनिष्ठ वर्ग की विजय टीम में सक्षम जैन पुत्र श्री संजीव जैन (डॉल्फिन) व कु. भव्या दुबे पुत्री श्री जितेन्द्र दुबे (डॉल्फिन) सम्मिलित थे। यह सभी बच्चे मोगलीलैण्ड (पेंच अभ्यारण्य) की यात्रा करेंगे। विद्यालय परिवार की ओर से सभी चयनित विद्यार्थियों को बधाई।

श्रद्धांजलि

हमारे विद्यालय के प्राचार्य श्री शैलेन्द्र दीक्षित के पूज्यनीय पिताजी श्री हरिशंकर जी दीक्षित का देहावसान दि. 17 सितम्बर 2016 को हो गया। विद्यालय परिवार की ओर से श्रद्धा सुमन।

दि. 28 अगस्त 2016, को हमारे विद्यालय की आचार्या कु. वन्दना भार्गव के अनुज श्री चन्द्रमोहन भार्गव का निधन हो गया। विद्यालय परिवार की ओर से श्रद्धा सुमन।

दि. 14 अगस्त 2016, को हमारे विद्यालय के वरिष्ठ आचार्य श्री ओमप्रकाश श्रीवास्तव की पूज्यनीय माताजी का देहावसान हो गया। विद्यालय परिवार की ओर से श्रद्धा सुमन।

हमारे विद्यालय के आचार्य श्री राजूलाल रैकवार के दादाजी श्री चतरे रैकवार का निधन दि. 11.8.16 को हो गया। वे 96 वर्ष के थे। विद्यालय परिवार की ओर से श्रद्धा सुमन।

बाल विज्ञान कांग्रेस के अन्तर्गत नवांकुर व डॉल्फिन के प्रोजेक्ट राज्य स्तर के लिए चयनित

राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस का जिला स्तरीय आयोजन विदिशा के उत्कृष्ट उ.मा.वि. में किया गया। इसमें नवांकुर का 1 व डॉल्फिन के 2 प्रोजेक्ट्स का चयन राज्य स्तर के लिए किया गया है। सीनियर वर्ग मेंनवांकुर का प्रोजेक्ट धूम्रपान एवं मद्यपान जैसे दुर्व्यसनों के संबंध में युवाओं के बीच जीवनशैली तथा आजीविका का अवलोकन विषय पर छात्रा कु. ऐश्वर्या तोमर के नेतृत्व में कु. निकिता दांगी, कु. नैनसी दुबे, गौरव शर्मा तथा शुभम रघुवंशी के द्वारा प्रस्तुत किया गया। यह प्रोजेक्ट विद्यालय के अध्यापक श्री यतेन्द्र बड़ोनिया के मार्गदर्शन में बनाया गया।

डॉल्फिन के दो प्रोजेक्ट राज्य स्तर के लिए चयनित किए गए। पहला प्रोजेक्ट जूनियर वर्ग में कक्षा –8 के छात्र अंकुश नायक के नेतृत्व में कु. लक्षिता राजपूत, समीर माथुर, कु. हर्षिता रघुवंशी, देवराज रघुवंशी ने स्वच्छ भारत अभियान विषय पर प्रस्तुत किया। सीनियर वर्ग में फास्ट फूड विषय पर कक्षा–9 की छात्रा कु. कनु प्रिया के नेतृत्व में कु. चित्रांशी श्रीवास्तव, कु. नैनसी सैनी, प्रियांश श्रीवास्तव एवं नितिन वाधवानी ने प्रस्तुत किया। यह प्रोजेक्ट विद्यालय की शिक्षिका श्रीमती इन्दु मिश्रा के मार्गदर्शन में बनाया गया।

उपरोक्त तीनों प्रोजेक्ट का चयन राज्य स्तर के लिए किया गया है। राज्य स्तरीय बाल विज्ञान कांग्रेस का आयोजन दिनांक 28 से 30 नवंबर 2016 तक भोपाल में किया जायेगा।

विद्यालय परिवार ने चयनित प्रोजेक्ट पर खुशी जाहिर करते हुये छात्र/छात्राओं को बधाई और शुभकामनाएँ दी हैं।

राज्य स्तरीय खो–खो प्रतियोगिता के लिए नवांकुर के छात्रों का चयन

मॉडल पब्लिक स्कूल में आयोजित सम्भाग स्तरीय खो–खो प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन के आधार पर नवांकुर के 3 छात्रों का चयन राज्य स्तरीय खो–खो प्रतियोगिता के लिये किया गया। इनके नाम हैं, जूनियर वर्ग में – कु. श्रद्धा दुबे कक्षा–1, अर्पित राजपूत, कक्षा–10 तथा सीनियर वर्ग में कु. शिवानी जायसवाल, कक्षा–12, राज्य स्तरीय खो–खो प्रतियोगिता का जूनियर वर्ग का आयोजन बुरहानपुर तथा सीनियर वर्ग का देवास में किया जायेगा।

विज्ञान मंथन यात्रा के लिये नवांकुर के 19 तथा डॉल्फिन के 4 छात्र चयनित

म0 प्र0 विज्ञान एवं प्रोद्यौगिकी परिषद् द्वारा मेधावी छात्र/छात्राओं के लिये आयोजित विज्ञान मंथन यात्रा के लिये नवांकुर विद्यापीठ के 19 तथा डॉल्फिन स्कूल के 4 छात्रों का चयन किया गया है।

इस यात्रा के लिये कक्षा 9 से कुल 11 छात्र कु. मुस्कान ठाकुर, कु. प्रार्थना लोधी, कु. सीमा सौजन्य, कु. शेख राफिया, कु. शिवानी दाँगी, कु. कीर्ति रघुवंशी, कु. मोना दाँगी, कु. स्नेहा रघुवंशी, कु. पूनम रघुवंशी, कु. सिमी दाँगी और शिपुल राजपूत कक्षा 10 से कु. मुस्कान दाँगी, कु. श्रुति शर्मा, कु. तनु ठाकुर, कक्षा 11 से कु. सोनम रघुवंशी तथा कक्षा 12 से कु. केशु जैन, आयुष अग्रवाल, नवीन सैनी और निखिल रघुवंशी का चयन किया गया है।

डॉल्फिन स्कूल के कक्षा 8 से हर्ष जैन तथा कक्षा 10 से कु. स्नेहा हर्किला, कु. शिल्पी रघुवंशी और सत्यम रघुवंशी का चयन किया गया है।

इस विज्ञान मंथन यात्रा में कक्षा–8 के छात्र इन्दौर, उज्जैन, पीथमपुर, कक्षा–9 के छात्र लखनऊ, कक्षा–10 के छात्र अहमदाबाद, कक्षा–11 के छात्र पुणे और कक्षा–12 के छात्र चण्डीगढ़ के वैज्ञानिक स्थलों का भ्रमण करेंगे। यह यात्रा दिनांक 15.10.2016 से प्रारम्भ होकर 23.10.2016 तक सम्पन्न होगी।

म0प्र0 विज्ञान एवं प्रोद्यौगिकी परिषद् द्वारा पिछले 10 वर्षों से विज्ञान के क्षेत्र में छात्र/छात्राओं को प्रेरित करने के उद्देश्य से इस यात्रा का निरन्तर आयोजन किया जा रहा है। जिसके लिये सम्पूर्ण म0प्र0 से प्रतिभाशाली छात्र/छात्राओं द्वारा ऑनलाइन आवेदन किया जाता है। मेरिट लिस्ट के आधार पर 625 छात्र/छात्राओंकाचयनदेशके विभिन्नभागोंमेंस्थितवैज्ञानिकस्थलों के भ्रमण, ख्याति प्राप्त वैधशालाओं, प्रयोगशालाओं और वैज्ञानिकों से रूबरू होने के लिये किया जाता है।

उल्लेखनीय है कि बीते वर्षों में नवांकुर विद्यापीठ से जिले में सर्वाधिक छात्रों का चयन इस यात्रा के लिये लगातार होता आ रहा है। विद्यालय परिवार ने उपर्युक्त सभी छात्र/छात्राओं और उनके अभिभावकों को बधाई और शुभकामनाएँ दी हैं।

दशहरा उत्सव पर नवांकुर की बच्चों द्वारा रंगारंग प्रस्तुति

नवांकुर/डॉल्फिन के छात्र राज्य स्तरीय मेले में करेंगे मॉडल का प्रदर्शन

दिनांक 24.10.2016 को संभाग स्तरीय विज्ञान मॉडल मेले का आयोजन भोपाल के पी.जी.वी.टी. कॉलेज में किया गया। जहाँ नवांकुर की छात्रा कु. मोना दाँगी,कक्षा–11 ने स्वास्थ्य एवं पोषण विषय पर तथा डॉल्फिन के छात्र अभिषेक सिकरवार कक्षा–9 ने खाद्य उत्पादन और कृषि विषय पर अपने–अपने मॉडलों को प्रस्तुत किया। इन दोनों मॉडलों का चयन राज्य स्तरीय मॉडल मेले के लिये किया गया है।

उल्लेखनीय है कि नवांकुर के छात्र स्नेह श्रीवास्तव कक्षा–11 और कु. मोना दाँगी कक्षा–11 तथा डॉल्फिन के छात्र प्रियांश कुशवाह कक्षा–10, चन्द्रम जायसवाल कक्षा–9 तथा अभिषेक सिकरवार कक्षा–9 ने संभाग स्तरीय विज्ञान मॉडल मेले में अपने–अपने मॉडल प्रस्तुत किये। जहाँ से कु. मोना दाँगी तथा अभिषेक सिकरवार के मॉडलों का चयन राज्य स्तरीय मॉडल मेले के लिये किया गया।

इन मॉडलों को बनाने में विद्यालय के वरिष्ठ अध्यापक अविनाश डोंगरे ने छात्रों को महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान किया। राज्य स्तरीय मॉडल मेले का आयोजन 28 से लेकर 30 नवंबर तक खण्डवा में किया जायेगा।विद्यालय परिवार ने कु. मोना दाँगी और अभिषेक सिकरवार को बधाई देकर उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।

डॉल्फिन के छात्रों द्वारा स्वच्छता कार्यक्रम आयोजित

बाल विज्ञान कांग्रेस डॉल्फिन के बैनर तले डॉल्फिन विद्यालय के छात्रों द्वारा नगर के वार्ड नं. 8 में स्वच्छता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान विद्यालय के परिसर के आसपास तथा वार्ड नं. 8 में छात्रों द्वारा झाड़ू लगाकर सफाई की गई व कचरे का निपटारा किया गया। छात्रों द्वारा नागरिकों कोस्वच्छता की प्रेरणा देने के उद्देश्य से पेम्पलेट्स का वितरण भी किया गया। इस कार्यक्रम में नगरपालिका के अधिकारी व कर्मचारियों ने छात्रों को भरपूर सहयोग प्रदान किया।

इस अवसर पर नगरपालिका अध्यक्ष प्रतिनिधि श्री रज्जन अग्रवाल, स्वास्थ्य निरीक्षक श्री आर.के.नेमा, वार्ड पार्षद राजू ठाकुर, नगरपालिका के अन्य कर्मचारीगण एवं विद्यालय के शिक्षक हितेश शर्मा भी उपस्थित थे। नागरिकों ने विद्यालय के छात्रों के कार्य की भूरि–भूरि प्रशंसा की। नगरपालिका के अधिकारी एवं कर्मचारियों द्वारा सहयोग प्रदान करने के लिये विद्यालय परिवार ने आभार माना।

सम्राट अशोक एकेडमी द्वारा मेधावी विद्यार्थियों व प्राचार्य महोदय का सम्मान

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर नवांकुर के नन्हे–मुन्ने बच्चे

रासेयो

रासेयो के तत्वावधान में
शिक्षक–दिवस आयोजित

नवांकुर विद्यापीठ में शिक्षक–दिवस का आयोजन धूमधाम के साथ किया गया। रासेयो के स्वयं–सेवक अक्षत शर्मा, अक्षत तिवारी, कु. ऋचा माथुर, कु. अनन्या दीक्षित ने इस आयोजन में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। साथ ही स्वयं सेवक अभिषेक पाठक व शिवानी जायसवाल ने सहयोग प्रदान किया।

सम्पूर्ण कार्यक्रम की प्रस्तुतियाँ शानदार थीं। सभी शिक्षकों को श्रीफल व रुमाल प्रदान कर सम्मानित किया गया। रासेयो प्रभारी शम्भूसिंह रघुवंशी ने कविता सुनाई। स्वयं सेविका दीपाली शर्मा ने स्वरचित कविता सुनाई। छात्र नितिन रिछारिया ने कार्यक्रम का संचालन किया। प्राचार्य महोदय ने छात्रों को आशीर्वाद प्रदान कर कार्यक्रम की भूरि–भूरि प्रशंसा की।

रासेयो नवांकुर इकाई का उन्मुखीकरण कार्यक्रम सम्पन्न

गंजबासौदा। नवांकुर विद्यापीठ की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई का छात्र उन्मुखीकरण कार्यक्रम बड़े ही उत्साह एवं प्रसन्नतापूर्वक सम्पन्न हुआ। जिसमें विद्यालय के लगभग 200 स्वयंसेवकों ने सहभागिता की। कार्यक्रम का शुभारम्भ अतिथियों द्वारा माँ सरस्वती एवं रासेयो के प्रेरणा पुरुष स्वामी विवेकानन्द जी के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन एवं माल्यार्पण से हुआ।

इस अवसर पर कु. दीक्षा राजपूत और उनके समूह द्वारा सरस्वती वन्दना का गायन किया गया। स्वयंसेविका शिवानी जायसवाल एवं अभिषेक पाठक ने अतिथियों का रोली, अक्षत द्वारा स्वागत किया। रासेयो प्रभारी श्री शम्भूसिंह रघुवंशी ने रासेयो के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि के रुप में मा.वि. की प्रधानाध्यापिका सुश्री अरुणा शर्मा, कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री पहलवानसिंह राजपूत, विशेष अतिथि श्री केशव लाहौरी उपस्थित थे।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में स्वयंसेवक छात्र मयंक भार्गव द्वारा जय–जगत, जय–जगत का गायन किया गया तथा समापन के समय हम होंगे कामयाब गीत का सामूहिक गायन किया गया। बालिका इकाई प्रभारी सुश्री वंदना भार्गव ने रासेयो की उपलब्धियों को प्रस्तुत किया। स्वयंसेविका सुषमा विश्वास एवं स्वयंसेवक अक्षय तिवारी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

समाजसेवी कान्तिभाई जी शाह ने कराया शौचालयों का निर्माण

नवाचारों के लिए अपनी विशिष्ट पहचान बनाने वाली संस्था नवांकुर विद्यापीठ की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा शिविर ग्राम बेंहटा में दो शौचालयों का निर्माण कराकर स्वच्छ भारत अभियान के अन्तर्गत अनूठी पहल की।

नगर के निकट, लेकिन मूलभूत सुविधाओं से दूर ग्राम बेंहटा में संस्था की रासेयो इकाई द्वारा सात दिवसीय विशेष शिविर दिसम्बर माह में लगाया था। शिविर में देखा गया कि ग्रामीण जनों द्वारा घरों के आस–पास, रास्तों पर गन्दगी करना एवं खुले में शौच जाना आम बात है। रैली, नारों से स्वच्छता का सन्देश नक्कारखाने में तूती की आवाज के समान बेअसर रहे, पर रासेयो इकाई ने हार नहीं मानी। नगर के प्रतिष्ठित समाजसेवी कान्तिभाई जी को ग्राम की इस समस्या से अवगत कराया। श्री शाह ने ग्राम में शौचालयों के निर्माण के लिए प्रति शौचालय बीस हजार रुपये दान देने की घोषणा की। पात्र हितग्राहियों का चयन किया गया। पप्पू अहिरवार पुत्र कल्लू अहिरवार एवं चन्दन कुशवाह पुत्र जवाहर कुशवाह के घर सर्वसुविधायुक्त शौचालयों का निर्माण कराया गया।

श्री कान्तिभाई जी शाह द्वारा अपने पिता जी (नागरिक सेवा समिति के संस्थापक श्री विशनजी भाई) की पुण्य स्मृति में चालीस हजार रुपये की सहयोग राशि प्रदान कर दो शौचालयों का निर्माण कराया।

'स्वच्छ भारत अभियान' में नवांकुर की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई की इस अभिनव पहल का ग्रामीणों पर गहरा प्रभाव पड़ा।

समाजसेवी कान्तिभाई जी शाह ने जो समाज–सेवा के कार्यों के लिये सदैव तत्पर रहते हैं तथा राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यों में इनकी अहम भागीदारी रहती है, चालीस हजार रुपये की राशि प्रदान कर नवांकुर के इस कार्य को सार्थकता प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। इस कार्य से लाभान्वित ग्रामीण जन अतिप्रसन्न हैं। इस अवसर पर उन्होंने भविष्य में खुले में शौच न करने व आसपास स्वच्छता रखने का संकल्प लिया।

नवांकुर में 450 छात्र/छात्राओं ने किया योगाभ्यास

राष्ट्रीय सेवा योजना, नवांकुर इकाई के तत्त्वावधान में विद्यालय में द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय योग– दिवस का आयोजन धूमधाम से किया गया।

इस अवसर पर विद्यालय के क्रीड़ा–प्रभारी श्री विजय शर्मा ने सूर्य–नमस्कार के आसन, अनुलोम–विलोम, भ्रामरी प्राणायाम, कपाल भांति तथा विभिन्न प्रकार की मुद्राओं का योगाभ्यास छात्र/छात्राओं से करवाया। इस दौरान 450 छात्र/छात्राओं ने इस योगाभ्यास में भाग लिया।

श्री शर्मा ने छात्रों को योगाभ्यास का महत्त्व बताते हुए कहा कि आज दुनिया के लगभग 200 देशों में अन्तर्राष्ट्रीय योग–दिवस का आयोजन किया जा रहा है। योग करने से हमारा तन–मन तो स्वस्थ रहता ही है, साथ में आध्यात्मिक लाभ भी मिलता है। अतः प्रतिदिन सभी को योग करना चाहिये।

इस अवसर पर विद्यालय के सभी शिक्षक/शिक्षिकाएँ विद्यालय प्रांगण में मौजूद थे, सभी ने योगाभ्यास में हिस्सा लिया।

समाचार सम्पादक – सुनील भावसार

सार–समाचार

1. विलियम्स बहनों ने महिला डबल्स का खिताब अपने नाम किया :– विम्बल्डन में विलियम्स बहनों ने कमाल करते हुए महिला डबल्स का खिताब अपने नाम किया। सिंगल्स में चैम्पियन बनने के बाद सेरेना अपनी बड़ी बहन वीनस के साथ मिलकर डबल्स विजेता बनी।

अमेरिका की विल्यिम्स बहनों ने फाइनल में हंगरी की टिमिया बाबोस और कजाखिस्तान की यारोस्लावा खेदोवा को सीधे सेटों में 6–3, 6–4 से हराया। सेरेना ने सिंगल्स खिताब जीतने के लिए 3 घण्टे के अन्दर डबल्स का फाइनल खेला।

2. 'सुल्तान' ने 12 दिन में दुनियाभर में कमाये 500 करोड़ :– सलमान खान और अनुष्का शर्मा की फिल्म 'सुल्तान' ने महज 12 दिन में दुनियाभर में 500 करोड़ रुपये की कमाई कर ली। इसने भारत से 371.17 करोड़, यूएसए और कनाडा से 35.17 करोड़, यूएई से 49.78 करोड़, यूके से 18.32 करोड़, पाकिस्तान से 17.28 करोड़ का कलेक्शन किया।

3. रियो गये 14 खेलों में 122 भारतीय खिलाड़ी :– भारत के 122 खिलाड़ियों में से पी.वी.सिन्धु ने बैडमिण्टन में रजत और साक्षी ने कुश्ती में कांस्य केवल दो पदक जीते।

4. टेस्ट में नं. 1 गेंदबाज बने यासिरः–पाकिस्तान को लाड्‌र्स के ऐतिहासिक मैदान पर 20 वर्ष बाद जीत दिलाने वाले लेग स्पिनर यासिर साह इंग्लैण्ड के खिलाफ पहले टेस्ट में 10 विकेट की उपलब्धि दर्ज करने के साथ ही विश्व–रैंकिंग में भी दुनिया के नंबर 1 टेस्ट गेंदबाज बन गये हैं।

5. ओलम्पिक वाली भारतीय हॉकी टीम में 10 खिलाड़ी म.प्र. के :– रियो ओलम्पिक की महिला हॉकी टीम के 18 सदस्यों में से 10 म.प्र. की बेटियाँ हैं। खेल एवं युवा मामलों की मन्त्री यशोधरा राजे सिन्धिया ने इसे म.प्र. के लिए गर्व की बात बतायी।

6. 44 सेकेण्ड में हमारा तेजस पहुँच जायेगा लाहौर :– आसमान में भारत की ताकत और बढ़ गई। बैंगलुरू में शंख की गूँज के साथ देश में बने पहले लाइट कॉम्बैट लड़ाकू विमान 'तेजस' को एयर फोर्स में शामिल किया गया। इन दो विमानों के बेड़े का नाम 'फ्लाइंग डैगर्स 45' है। 1350 कि.मी. प्रति घण्टे की रफ्तार से आसमान का सीना चीरते हुए 'तेजस' 44 सेकेण्ड में लाहौर पहुँच जायेगा। यह चीन और पाक द्वारा मिलकर बनाये गये जेएफ 17 थण्डर को भी फीका कर देता है। 'तेजस' को शामिल करने से पहले पूजा–पाठ की गयी।

7. नासा के वैज्ञानिकों ने खोज डाले 100 से ज्यादा ग्रह :– अमरीकी खगोल वैज्ञानिकों के एक दल ने केपलर दूरबीन की सहायता से 100 से ज्यादा ग्रहों की खोज की है। इसे अब तक की सबसे बड़ी उपलब्धि करार दिया गया है।

8. किताबें पढ़ने से बढ़ती है दूसरों को परखने की क्षमता :– वैज्ञानिकों का मानना है, फिक्शन उपन्यास पढ़ने से हमारे अन्दर दूसरों के प्रति हमदर्दी पैदा होती है। हम दूसरों के दृष्टिकोण को बेहतर तरीके से समझते हैं। उपन्यास पढ़ने से हम अपने सामाजिक अनुभवों को बेहतर तरीके से समझते हैं। टोरंटो के एप्लाइड मनोविज्ञान–विभाग के प्रोफेसर कीथ ओटले ने यह अध्ययन किया है।

9. एन्टोनी ग्रिजमैन बने प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट :– मेजबान फ्रांस के स्टार खिलाड़ी और सर्वाधिक गोल स्कोरर रहे एण्टोनी ग्रिजमैन को यूरो कप फुटबाल टूर्नामेण्ट 2016 में उनके अद्‌भुत प्रदर्शन के लिए सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी चुना गया है, जबकि विजेता पुर्तगाल के रूई पैट्रिसियो को सर्वश्रेष्ठ गोलकीपर चुना गया है।

10. विराट–पारी से जीता भारत :– एण्टीगुवा–भारत के कप्तान विराट कोहली की बेदाग खेली गयी, 200 रनों की पारी और रवि चन्द्रन आश्विन के दूसरी पारी में धमाकेदार गेंदबाजी प्रदर्शन (7 विकेट) की बदौलत भारत ने वेस्टइण्डीज को पहले टेस्ट में उसी की धरती पर एक पारी और 98 रनों से पराजित कर दिया। विदेशी धरती पर अपने पहले ही टेस्ट में विराट द्वारा

बनाया गया शतक किसी भारतीय कप्तान द्वारा बनाया गया यह पहला शतक है। आश्विन को ''मेन ऑफ द मैच'' का पुरस्कार मिला।

11. ढाई हजार वर्ष पूर्व भी होती थी प्लास्टिक सर्जरी :– एक नये शोध से पता चला है कि आज से लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व भी प्लास्टिक सर्जरी की विधि चिकित्साविदों द्वारा अपनायी जाती थी। मिस्र में मिले ढाई हजार वर्ष पुराने कुछ लेखों से यह पता चलता है कि उस समय प्लास्टिक सर्जरी को उपयोग में लाया जाता था। इसी प्रकार के उदाहरण भारत में भी मिलते हैं। संस्कृत भाषा में लिखे गये शोध पत्रों में सुश्रुत द्वारा किये गये प्रयोगों का विवरण उपलब्ध है।

12. 'ओ' रक्त समूह–वाले लोगों की ओर अधिक आकर्षित होते हैं मच्छर :– शोधों से पता चला है कि मच्छरों को एक खास ब्लड ग्रुप वाले लोग अधिक पसन्द आते हैं। अन्य ब्लड–ग्रुप वाले लोगों की अपेक्षा ''ओ'' ब्लड–ग्रुप वाले लोगों की ओर मच्छर अधिक आकर्षित होते हैं। देखा गया है कि यदि 'ए' और 'बी' ग्रुप वाले लोगों के शरीर पर मच्छर एक बार बैठते हैं, तो 'ओ' ब्लड ग्रुप वाले लोगों के शरीर पर वे दो बार बैठते हैं। जो लोग ज्यादा कार्बन डाईआक्साइड छोड़ते हैं, उनकी ओर भी मच्छर अधिक आकर्षित होते हैं। मच्छर 164 फुट की दूरी से ही कार्बन डाइऑक्साइड पहचनाने में सक्षम होते हैं।

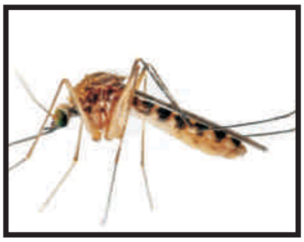

13. बिन रोनाल्डो पुर्तगाल बनी यूरो कप चैम्पियन :– पेरिस पुर्तगाली फुटबॉल टीम के युवाओं ने वो कर दिखाया, जो पुर्तगाल के 25 साल के इतिहास में कभी नहीं हो पाया। यूरो कप–2016 के फाइनल मुकाबले में वह भी क्रिस्टियानो रोनाल्डो की अनुपस्थिति में, जिनके बिना पुर्तगाली फुटबॉल टीम के बारे में सोचा ही नहीं जाता। रोनाल्डो के चोटिल होकर पहले ही हॉफ में बाहर होने के बाद 16 साल में पहली बार एकस्ट्रा टाइम में गये यूरो कप के फाइनल मुकाबले में पुर्तगाल की टीम ने स्थानापन्न खिलाड़ी एडर के शानदार गोल से फ्रांस को 1–0 से हराकर, 'हेनरी डिलोने ट्रॉफी' पर कब्जा कर लिया। फ्रांस का 2000 के बाद पहली बार यूरो कप खिताब जीतने का सपना भी इसी के साथ ध्वस्त हो गया।

समाचार सम्पादक – सुनील भावसार

शिक्षक की कलम

विद्यार्थियों में फैशन

'फैशन' शब्द से आशय शिष्टाचार, रीति–रिवाज, वस्त्र, केश–सज्जा, रूप–निखार और इसी प्रकार की अनेक बातों के सम्बन्ध में नित नवीन उद्भावनाओं से है। यद्यपि सामाजिक आवश्यकताओं, साधनों परिस्थितियों और युग–प्रभाव से आचरण, रीति–रिवाज, रहन–सहन और वेशभूषा में निरन्तर परिवर्तन होता रहता है, किन्तु इस परिवर्तन और फैशन में अन्तर है।

आज विद्यार्थी–वर्ग में जिस प्रकार के फैशन का प्रचार है, वह नितान्त निरापद नहीं है; वरन् वह कुप्रवृत्तियों को प्रेरित–पोषित करने वाला और बुरे व्यसनों का जन्मदाता है। इस प्रकार की फैशन–परस्ती के रोग का मूल कारण सिनेमा और टेलीविजन पर दिखाये जाने वाले विज्ञापनों, कार्यक्रमों और फिल्मों से विद्यार्थियों का प्रभावित एवं गुमराह होना स्वाभाविक है। फिल्मों में रामांस के कथानक बालकों को ऐसी काल्पनिक दुनिया में पहुँचा देते हैं, जो नितान्त स्वप्निल होती हैं, कच्ची आयु का बालक उस दुनिया के सपने देखने और उसमें जीने लगता है। फिल्मों के अभिनेता और अभिनेत्रियों के वस्त्र, जीवनशैली, रूप–सज्जा और यहाँ तक कि शिष्टाचार व व्यसन आदि की भी किशोर बालक नकल करने की कोशिश करने लगता है। यह नकल ही फैशन की प्रेरणा देती है। आशय आदेश देना नहीं है, किन्तु यह बताना है कि विद्यार्थी–जीवन का उद्देश्य विद्या का अभ्यास व ज्ञान अर्जन है। विद्यार्थी को यदि व्यसन होना चाहिए तो विद्या का। यही विद्या उसके जीवन का आधार होती है। अतः, उसे इस कार्य में पूरे मन से लगे रहना चाहिए। विद्यार्थी–काल स्वर्णिम अवसर है, जो बार–बार नहीं मिलेगा। अतः, विद्या–अध्ययन में ध्यान केन्द्रित करना चाहिए, न कि फैशन में धन, समय व शक्ति का अपव्यय करना चाहिए।

– राजेन्द्र सिंह यादव

सहायक शिक्षक

हमारे अतिथि

सपनों को साकार बनाती कविता,
सुख–दुःख का अहसास कराती कविता।
कभी हँसाती–कभी रुलाती है कविता,
गीत–गजल में प्राण जगाती है कविता।
व्यंग्यों के भी तीर चलाती है कविता,
रिसते घावों को सहलाती है कविता।
कितनी मीठी तान सुनाती है कविता,
मन के अन्दर घर कर जाती है कविता।
यादों की भी याद दिलाती है कविता,
मेरी प्रीत के गीत सुनाती है कविता।
मरुस्थल में जल बरसाती है कविता,
मेरी हार को जीत बनाती है कविता।
कभी–कभी सड़कों पर आती है कविता,
इंकलाब के गीत सुनाती है कविता।
सत्ता के गलियारे थर्राती है कविता,
तख्तों पर से ताज हटाती है कविता।
हमको अपनी राह दिखाती है कविता,
अँधियारों में दीप जलाती है कविता।
बहरों को आवाज सुनाती है कविता,
आपसी मनुहार बढ़ाती है कविता।
आमजनों के दर्द को भाती है कविता,
आत्मा की आवाज सुनाती है कविता।
सबके मन का भाव बताती है कविता,
सहज भाव से सब कह जाती है कविता।
कान्हा को भगवान बनाती है कविता,
सब धर्मों को एक बताती है कविता।
जीवन के संस्कार सिखाती है कविता,
गीता जैसे ग्रन्थ लिखाती है कविता।
जब उसको आना होता आती है कविता,
मेरे कागज कलम उठाती है कविता।
मुझको अपनी गोद में लेकर,
मुझसे जाने क्या–क्या लिखवाती है कविता।

– नीलेश चतुर्वेदी,
जिला संयोजक, 'राष्ट्रीय कवि संगम' बासौदा

बेटियाँ

फूलों की फुलवारी का नाम
बेटियाँ होती हैं।
पतझड़ में ऋतु बसन्त का भाव
बेटियाँ होती हैं।
निर्मल जल में कल-कल की आवाज
बेटियाँ होती हैं।
संकट के बादल राष्ट्र क्षितिज पर
यदा-कदा भी छाये हैं।
तिमिर गेह में किरण आचरण का सद्भाव
बेटियाँ होती हैं।
माँ के आँचल की धारा का राग
बेटियाँ होती हैं।
पिता के हृदय-चक्षु की साख
बेटियाँ होती हैं।
घर के कोने-कोने का चिराग
बेटियाँ होती हैं।
राष्ट्र-पटल के गौरव का उत्थान
बेटियाँ होती हैं।
राष्ट्र-पताका शीर्ष की खातिर बलिदान
बेटियाँ होती हैं।
झाँसी की रानी-सा सम्मान
बेटियाँ होती हैं।
राणाप्रताप के संकल्पों का अभिमान
बेटियाँ होती हैं।
रणभूमि में रणचण्डी का अवतार
बेटियाँ होती हैं।
युद्धकला में शोणित का पर्याय
बेटियाँ होती हैं।
रक्त में लथपथ सैनिकों का स्वाभिमान
बेटियाँ होती हैं।

– ध्रुवनारायण शर्मा "बेचैन"
युवाकवि-राष्ट्रीय कवि संगम, जिला इकाई विदिशा

बच्चों की कलम

विद्यालय गीत

विद्या का मन्दिर है ये,
और ज्ञान–दीप है प्यारा।
सबसे उन्नत, सबसे अच्छा,
शिक्षा–केन्द्र हमारा।
शिष्यों को शिक्षा के
पाठ हैं यहाँ पढ़ाते।
प्रकृति के नियमों से,
अवगत उनको करवाते।
लक्ष्य की प्राप्ति हो,
यही पहला ध्येय हमारा।
सबसे उन्नत, सबसे अच्छा
शिक्षा–केन्द्र हमारा।
अनुशासन और शिक्षा के संग,
सीखें साफ–सफाई।
आओ, इस पर अमल करें,
हम मिलकर सारे भाई।
निष्ठा से कर्त्तव्य करेंगे,
यही संकल्प है हमारा।
सबसे उन्नत, सबसे अच्छा
शिक्षा–केन्द्र हमारा।
दुविधाओं को टालें हम सब
ऐसा कार्य करेंगे।
जन–सेवा में अपना,
तन–मन–न्यौछावर कर देंगे।
बढ़े प्रतिष्ठा विद्यालय की,
मान बढ़ेगा हमारा।
सबसे उन्नत, सबसे अच्छा
शिक्षा–केन्द्र हमारा

– सम्यक जैन
कक्षा–11 'जीव विज्ञान'

जरूरत है सिर्फ इंसान की

मैं नहीं कहती कि आप सूरज बनें,
क्योंकि सूरज तो आप बन जायेंगे,
और इस जग को प्रकाशमय भी कर जायेंगे,
पर इस सौरमण्डल के सूरज का क्या होगा?
क्या यह प्रकृति के खिलाफ न होगा?

मैं नहीं कहती कि आप चाँद बने,
क्योंकि चाँद तो आप बन जायेंगे,
और इस जग को सुरम्य कर जायेंगे,
पर इस सुन्दरता के साथ आपका,
अस्तित्व खो जायेगा।
उजाले के साथ,
हर–तरफ अँधेरा हो जायेगा।

मैं चाहती हूँ कि आप एक इंसान बने,
क्योंकि एक इंसान ही तो है,
जो सूर्य की महानता समझ सकता है।
जो मयंक की शीतलता ग्रहण कर सकता है।
जो सागर को शब्दों में समेट सकता है।
जो इस धरती को माँ कह सकता है।

और इस माँ को,
एक और सूरज की जरूरत नहीं,
उसे जरूरत है, इस सृष्टि के सम्मान की,
उसे जरूरत है, हर दिल में भगवान की,
उसे जरूरत है, सिर्फ इंसान की।

कु. कविता बघेल
कक्षा–11 'जीव विज्ञान'

''समन्दर की भी गइराई तो यारों हमने नापी है।
गगन पर चाँद–तारों की फिजाएँ हमने छापी हैं।
हमारे हौसलों पर मुश्किलें भी नाज हैं करतीं।
नवांकुर के हैं हम बच्चे यही पहचान काफी है।''
–अक्षय श्रीवास्तव ''दीप''

ये तेवर हैं तरुणाई के

हिन्द देश की युवा शक्ति का, आओ हम गुणगान करें।
नये खून पर नये जोश पर, आओ हम अभिमान करें।
अपनी पर आ जायें तो, पत्थर को तरल बना देंगे।
दुश्मन की हर साँसों को, हम पल में गरल बना देंगे।
और शिला पर दूब उगाना, हम तरुणों को आता है।
हमें दहकते शोलों से भी, रास रचाना भाता है।
ऐसे अपने युवा–बन्धु जो, उनकी हम पहचान करें।
हिन्द देश की युवा–शक्ति का, आओ हम गुणगान करें।
जब–जब संकट पड़ा देश पर, घोर अँधेरा छाया है।
आजाद भगत या राजगुरु, जाँबाज सामने आया है।
स्वागत हमको कब भाया है, महलों की शहनाई का।
सबने जज्बा देखा है, हम तरुणों की तरुणाई का।
आओ भूलें अहम आज हम, इनको और जवान करें।
हिन्द देश की युवा–शक्ति का, आओ हम गुणगान करें।
अबला का रक्षण करना या अर्थ व्यवस्था बिगड़ी हो।
संस्कार जब तार–तार हों, भ्रष्टाचारी खिचड़ी हो।
रक्षक ही जनता के भक्षक, अगर कभी बन जाते हैं।
तरुणाई के तेवर ही तब, सच्ची राह दिखाते हैं।
आओ, ऐसे तरुणों का, हम मिलकर सब सम्मान करें।
हिन्द देश की युवा–शक्ति का, आओ हम गुणगान करें।

–अक्षय श्रीवास्तव ''दीप'', नवांकुर कवि,
कक्षा– 10 'एफ'

सहनशीलता

सुकरात यूनान के महान् विचारक और दार्शनिक थे। वे सड़क पर जहाँ भी खड़े हो जाते, लोग उन्हें घेर लेते और भाँति–भाँति के प्रश्न पूछते। कभी–कभी तो लोग उनसे बेसिर–पैर के प्रश्न पूछने बैठ जाते, किन्तु सुकरात शान्त भाव से उन प्रश्नों के उत्तर देते। लोगों से घिरे रहने के कारण सुकरात कई–कई घण्टों तक घर से बाहर रहते थे। इस कारण उनकी पत्नी बहुत अधिक रुष्ट रहा करती थी। वैसे भी वह बहुत कठोर स्वभाव की स्त्री थी। सुकरात बड़े ही शान्त भाव से उसे सुन रहे थे। जब बहुत देर हो गयी और पत्नी का बोलना बन्द नहीं हुआ तो सुकरात उठकर बाहर जाने लगे। यह देखकर उनकी पत्नी का क्रोध और बढ़ गया। पास ही गन्दे जल से भरी एक बाल्टी रखी थी। क्रोध से तिलमिलाते हुए उसने सारा गन्दा पानी सुकरात के ऊपर उड़ेल दिया। वे ऊपर से नीचे तक भीग गये। उनके कपड़े भी गन्दे हो गये। फिर भी सुकरात शान्त रहे, जैसे कुछ न हुआ हो। मुस्कुरा कर शान्त भाव से केवल इतना ही कहा –इतनी भीषण उमड़–घुमड़ और गर्जन के बाद वर्षा तो होनी ही थी।

– कु. भाग्य श्री लोधी, कक्षा – 7 'स'

मैं बोझ नहीं हूँ

(एक बेटी की पुकार)

शाम हो गयी, अभी तो घूमने चलो न पापा।
चलते–चलते थक गयी, कन्धे पे बिठा लो न पापा।
अँधेरे से डर लगता, सीने से लगा लो न पापा।
मम्मी तो सो गयी,
अब आप थपकी देकर, सुलाओ न पापा।
स्कूल तो पूरा हो गया,
अब कॉलेज जाने दो न पापा।
पाल–पोस कर बड़ा किया,
अब जुदा मत करो न पापा।
अब डोली में बिठा ही दिया है तो,
आँसू तो मत बहाओ न पापा।
आपकी मुस्कुराहट अच्छी है,
आपने मेरी हर बात मानी,
एक बात और मान जाओ न पापा।
इस धरती पर हम बोझ नहीं हैं पापा।
दुनिया को समझाओ न पापा।

कु. चंचल शर्मा
कक्षा– 11 'वाणिज्य द्वितीय'

साँसे करती युद्ध

जलवायु में परिवर्तन। क्या देते हैं संकेत।
नदियाँ हैं सूखी–सूखी। बाकी केवल रेत।
बाकी केवल रेत, नदारद है हरियाली।
सीमेण्टी बिल्डिंग में। रोती है खुशहाली।
धूल, धुआँ लबरेज है, साँसें करती युद्ध।
भले सुबह का हो भ्रमण, हवा नहीं है शुद्ध।
गिनती सारी भूल गये, इतने काटे पेड़।
पंछी बेघर हो गये, चर्चा करती भेड़।
पर्यावरण का सन्तुलन, हल है केवल वृक्ष।
बिगड़ा तो न सुधरेगा, हो कोई कितना दक्ष।

–शिवानी रघुवंशी, कक्षा–11 (बायो)

बेटी सिर्फ बेटी नहीं होती

बेटी सिर्फ बेटी नहीं होती,
माता–पिता की आन होती है।
बेटी कई रूपों में विद्यमान होती है।
बेटी पायल की छमछम है,
बेटी घर की मुस्कान है।
बचपन का घर कुल्या है,
बेटी घर की पहचान है।
बेटी घर की लक्ष्मी है, बेटी सरस्वती है।
माँ की नन्हीं कली है।
बेटी बेटों से भली है।
बेटी मेंहदी है, रंगोली है, बेटी तीज है, त्यौहार है।
जीवन के तपिश के दिनों में,
बेटी सावन की बौछार है।
बेटी होली है, दीवाली है।
दीपक की ज्योति, पूजा की थाली है।
सच पूछो तो, जिस घर में बेटी है,
तो उस घर में खुशहाली है।
बेटी अहिल्या है, लक्ष्मीबाई है, बेटी दुर्गा, काल है।
इतिहास के विषम काल में,
बेटी ने ही की रखवाली है।
बेटी सृजन है संस्कार है बेटी,
सृष्टि का आकार है।
बेटी रचकर ही ब्रम्हा का,
सृजन कार्य पूरा होता है।
जिस घर में बेटी न,
वह परिवार अधूरा होता है।

– कु. पूजा दुबे
कक्षा – 10 'स'

सत्संग का प्रभाव

एक दिन नामदेव से उनकी माँ ने कहा, बेटा! जरा दवा बनाने के लिए आँवले के वृक्ष की थोड़ी–सी छाल तो उतार लाओ। मुझे एक आवश्यक दवा बनाने के लिए उसकी आवश्यकता है। माँ का यह आदेश मिलते ही नामदेव आँवले के वृक्ष की खोज में निकल गये। कुछ देर बाद, जब वह आँवले के पेड़ की छाल उतार कर घर लौटने लगे तो, रास्ते में उन्हें एक महात्मा मिले। नामदेव ने उन्हें श्रद्धा से झुककर प्रणाम किया। महात्मा ने पूछा–''यह क्या है हाथ में?'' नामदेव ने उत्तर दिया – ''दवा बनाने के लिए आँवले के वृक्ष की छाल उतार कर लाया हूँ।'' महात्मा ने कहा – ''क्या तुम्हें पता नहीं है कि हरे पेड़ को क्षति पहुँचाना अधर्म है, वृक्षों में भी तो जीवन होता है। इन्हें देवता मानकर पूजा जाता है। वैद्य जब किसी वृक्ष की पत्तियाँ तोड़ते हैं तो पहले हाथ जोड़कर प्रार्थना करते हैं कि दूसरों के प्राण बचाने के उद्देश्य से ही आपको यह कष्ट दिया जा रहा है। यह हमारी संस्कृति का विधान है।'' नामदेव इस बात से प्रभावित हुए। घर पहुँच कर उन्होंने छाल माँ को दे दी और एक कमरे के कोने में बैठ कर तेज धार वाले चाकू से अपने पैर की त्वचा छीलने लगे, उनके पैर से खून बहते देखा, तो माँ ने पूछा–''तू यह क्या कर रहा है बावले?'' उन्होंने जवाब दिया–''महात्मा ने कहा था कि पेड़ों में जीवन होता है।'' यह सुन माँ ने बेटे को छाती से लगा लिया। वह समझ गयी कि बेटे पर सत्संगी विचारों का प्रभाव पड़ रहा है। आगे चलकर तो नामदेव स्वयं सन्त बन गये।

आयुष नामदेव
कक्षा–11 'एम–1'

मेरी बिल्ली

मेरी बिल्ली बड़ी शरारती,
घर–घर में घुस जाती है।
घूम–घूम कर सूँघ–सूँघ कर,
सब कुछ चट कर जाती।
रखा दूध था गरम खूब था, आई आफत भारी।
जीभ जल गयी, सजा मिल गयी, तब चोरी की सारी।

– अतिक भार्गव, कक्षा – 7 'स'

पंक्तियाँ

जब भी अपनी शख्सियत पर अहंकार हो,
एक फेरा श्मशान का जरूर लगा लेना।
और.....
जब भी अपने परमात्मा से प्यार हो,
किसी भूखे को अपने हाथों से खाना खिला देना।
और...
जब भी आपका सिर श्रद्धा से झुका हो,
अपने माँ–बाप के पैर जरूर दबा देना।
कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है
और जो खो दिया उसे पाने के लिए
अपना सब कुछ खोना बुरी बात नहीं है।
क्योंकि....
जीभ जन्म से होती है, मृत्यु तक रहती है।
क्योंकि वो कोमल होती है।
और दाँत जन्म के बाद आते हैं,
मृत्यु से पहले चले जाते हैं, क्योंकि वे कठोर होते हैं।

– नीलेश दांगी, कक्षा–11, एम–3

गणित बड़ी समस्या

मैया मोरि मोहि गणित, नेक नहीं भावै।
भिन्न–भिन्न को नाम सुनत ही, मेरो मन भिन्नावै।।
बाकी, जोड़, गुणा, भाग लगावन बैठूँ सही न आवे।
हासिल अलग भूल जाऊँ तो, प्रश्न गलत हो जावै।।
थोड़ी–थोड़ी गलती पर, मास्टर जी मार लगावै।
मैया मोरि मोहि गणित, नेक नहीं भावै।।
क्षमा कितनीहि माँग लेहूँ, तरस तनिक नहीं आवे।
एल्जेबरा तो और जबर्दस्त है, देख चढ़े ज्वर आवै।।
प्लस, माइनस के चक्कर में, प्रश्न गलत हो जावै।
ज्योमैट्री को नाम सुनत ही, मेरी तबियत घबरावै।।
ट्रिगनामेट्री में मास्टर, थीटा शब्द रटावै।
मैया री अरदास करुँ, मेरा भेजा खाली हो जावै।।
जान तो मेरी मैया, मैया जा से पिण्ड छुड़ावै।
मैया मोरि गणित नेक नहीं भावै,
मैया मोरि गणित नेक नहीं भावे।।

– कु. तनु ठाकुर, कक्षा–10 'एफ'

बेटियाँ

बेटियाँ पावन दुआएँ हैं,
बेटियाँ, शुभकामनाएँ हैं।
बेटियाँ पावन दुआएँ हैं।
बेटियाँ, जीनत हदीसों की।
बेटियाँ, जातक कथाएँ हैं।
बेटियाँ, गुरुग्रन्थ की वाणी,
बेटियाँ वैदिक ऋचाएँ हैं।
जिनमें खुद भगवान बसता है,
बेटियाँ, वे वन्दनाएँ हैं।
त्याग, तप, गुण, धर्म, साहस की,
बेटियाँ, गौरव–कथाएँ हैं।
मुस्कुरा के पीर पीती हैं,
बेटियाँ, हर्षित व्यथाएँ हैं।
लू लपट को दूर करती हैं,
बेटियाँ, जल की घटाएँ हैं।
इस प्रदूषण के जमाने में,
बेटियाँ, सुरक्षित फिजाएँ हैं।
दुर्दिनों के दौर में देखा,
बेटियाँ, संवेदनाएँ हैं।

— **कु. दीपिका बघेल,** कक्षा–10 'ब'

---

1. चंदन की लकड़ी फूलों का हार।
अगस्त का महीना, सावन की फुहार।
भैया की कलाई, बहन का प्यार।

2. मेंहदी–रोली–कंगन का अवतार नहीं होता।
रक्षाबन्धन भैया–दूज का त्यौहार नहीं होता।
वह घर सूना रह जाता, इस दुनिया में,
जिसके घर में बेटी का अवतार नहीं होता।

3. जिन्दगी में सफलता कभी पक्की नहीं होती।
और असफलता कभी अन्तिम नहीं होती।
इसलिए आप अपनी कोशिश को तब तक जारी रखें।
जब तक आपकी जीत एक इतिहास ना बन जाये।

— **कु. वैशाली गोस्वामी**
कक्षा– 10 'स'

माँ

तुम हो तो घर स्वर्ग है माँ, सुरक्षित कोना–कोना माँ।
मेरे जीवन का सब कुछ है, बस एक तुम्हारा होना माँ।
जिनको भूल नहीं मैं सकती,
तुम वही अनुपम सूरत हो।
कैसे बतलाऊँ मैं माँ, तुम,
कितनी बड़ी जरूरत हो।
ये जीवन क्या, जनम–जनम तक बस मेरी ही होना माँ।
सदा हँसाना, हर पल हँसना, कभी नहीं तुम रोना माँ।
सबसे अनुपम ये दिन न्यारा,
जन्म–दिवस माँ आज तुम्हारा।
क्यों दिन बीते, बढ़ता जाये,
नेह कलश स्नेह–हमारा।
भूल चुके या गहन थकन ही तुम बन जाओ माँ।
तुम हो तो घर स्वर्ग है माँ, सुरक्षित कोना–कोना माँ।

— **कु. निवेदिता जोशी,** कक्षा– 11'एम–3'

Similarity

Temple में 6 अक्षर हैं और Maszid और Church में भी।
Geeta में 5 अक्षर हैं और Quran और Bible में भी।
Live में 4 अक्षर हैं और Dead में भी।
Hate में 4 अक्षर हैं और Love में भी।
Negative में 8 अक्षर हैं और Positive में भी।
Failure में 7 अक्षर हैं और Success में भी।
Anger में 5 अक्षर हैं और Happy में भी।
Right में 5 अक्षर हैं और Wrong में भी।
Rich में 4 अक्षर हैं और Poor में भी।
Fail में 4 अक्षर हैं और Pass में भी।
Cry में 3 अक्षर हैं और Joy में भी।
अगर विरोधी शब्दों में भी समानता है,
तो फिर अपनों में क्यों नहीं?
आज इसकी सबसे ज्यादा जरूरत है।

निखिल रघुवंशी
कक्षा– 12 'गणित'

मत ठहरो तुमको चलना ही चलना है

मत ठहरो तुमको चलना ही चलना है।
चलने के प्रण से, तुम्हें नहीं टलना है।
केवल गति ही जीवन, विश्रान्ति पतन है।
तुम ठहरे तो समझो ठहरा जीवन है।
जब चलने का व्रत लिया, ठहरना कैसा?
अपने हित सुख की खोज बड़ी छलना है।
मत ठहरो तुमको चलना ही चलना है।
तुम चलो, जमाना अपने साथ चलाओ,
जो पिछड़ गये हैं आगे उन्हें बढ़ाओ।
तुमको प्रतीक बनना है विश्व प्रगति का,
तुमको जन–हित के साँचे में ढलना है।
मत ठहरो, तुमको चलना ही चलना है।
बाधाएँ असफलताएँ तो आती हैं।
दृढ़निश्चय लख वे स्वयं चली जाती हैं।
जितने भी रोड़े मिलें, उन्हें ठुकराओ।
पथ के काँटों को, पैरों से दलना है।
मत ठहरो, तुमको चलना ही चलना है।
जो कुछ करना है, उठो! करो, जुट जाओ।
जीवन का कोई क्षण, मत व्यर्थ गँवाओ।
कर लिया काम, भज लिया राम यह सच है,
अवसर खोकर तो सदा हाथ मलना है।
मत ठहरो, तुमको चलना ही चलना है।

— नमन गुप्ता
कक्षा— 7 'ब'

बचपन

छीनकर खिलौनों
को बाँट दिये गम,
बचपन से दूर बहुत दूर हुए हम।
अच्छी तरह से अभी पढ़ना न आया,
कपड़ों को अपने बदलना न आया।
लाद दिये बस्ते हैं भारी–भरकम,
बचपन से दूर बहुत दूर हुए हम।
देकर के थपकी न माँ मुझे सुलाती,
दादी है अब नहीं कहानियाँ सुनाती।
बिलख रही कैद बनी जीवन–सरगम,
बचपन से दूर बहुत दूर हुए हम।
इतने कठिन विषय कि छूटे पसीना,
रात–दिन किताबों को घोट–घोट पीना।
उस पर भी नम्बर आते कम,
बचपन से दूर बहुत दूर हुए हम।
अंग्रेजी शब्दों का पढ़ना–पढ़ाना,
घर आके दिया हुआ काम निबटाना।
होमवर्क करने में फूल जाये दम,
बचपन से दूर बहुत दूर हुए हम।
बिलख रही कैद बनी, जीवन सरगम
बचपन से दूर बहुत दूर हुए हम।।

— कु. पलक जैन
कक्षा–11'वाणिज्य'

माननीय अब्दुल कलाम के सुविचार

1 सपने वो नहीं जो आप नींद में देखते हैं; सपने वो हैं जो आपको नींद ही नहीं आने दें।
2. इन्तजार करने वालों को सिर्फ उतना ही मिलता है, जितना कोशिश करने वाले छोड़ देते हैं।
3. सफलता की कहानियाँ मत पढ़ो, उनसे आपको केवल एक सन्देश मिलेगा। असफलता की कहानियाँ पढ़ो, उनसे आपको सफल होने के कुछ आइडियाज मिलेंगे।
4. ब्लैक कलर ऋणात्मकता के रूप में बुरा होता है, लेकिन हर ब्लैक बोर्ड विद्यार्थियों की जिन्दगी ब्राइट करता है।
5. हर सुबह पाँच बातें अपने आप में बोलो – (1) मैं सबसे अच्छा हूँ। (2) मैं यह कर सकता हूँ। (3) भगवान हमेशा मेरे साथ है। (4) मैं एक विजेता हूँ। (5) आज का दिन मेरा दिन है।

— सक्षम जैन, कक्षा–8 'ब'

क्या आप जानते हैं –

आपका मस्तिष्क बूढ़ा नहीं होता है

शीर्षस्थ हार्ट–सर्जन 'माइकल डेबेकी' ने खून का पहला रोलर पम्प 1932 में ईजाद किया था। उनका बनाया पम्प आज भी बाईपास सर्जरी में प्रयुक्त हाता है। नब्बे साल की उम्र में डॉ. डेबेकी को एक नये आविष्कार पर प्रयोग शुरु करने की अनुमति मिली। यह एक छोटा पम्प था, जिसे गम्भीर हृदय रोगियों के सीने में लगाया जा सकता था। डेबेकी सिर्फ शोध से ही सन्तुष्ट नहीं थे, वे सर्जरी भी करते रहे। उनके बारे में एक सहयोगी ने कहा था ''उन्होंने जितना किया है, उतना करने के लिए बाकी लोगों को पाँच–छह जन्म लेने पड़ेंगे।''

डेबेकी ने नब्बे साल की उम्र में अपने जीवन–दर्शन का सार इस तरह से व्यक्त किया था, ''जब तक आपके सामने चुनौतियाँ हैं और आप शारीरिक तथा मानसिक रूप से सक्षम हैं, तब तक जीवन रोमांचक और स्फूर्तिवान् है।''

– कु. विजेता रघुवंशी
कक्षा– 11 'जीव विज्ञान'

माँ

माँ मार्मिक है, माँ दार्शनिक है, माँ ममता की मूरत है, माँ संवेदना की सूरत है, माँ सृष्टि की अनमोल धरोहर है, माँ प्रेरणा है, माँ करुणा की धाम है, माँ ब्रह्माण्ड का आधार है।
माँ की वन्दना आओ हम मिलकर करें, माँ के चरणों में शत–शत नमन करें, माँ जीवन की कसौटी है, माँ की कृपा से हर मन्जिल आसान होती है।

माँ के आशीष से जीवन सँवरता है, माँ के संस्कार से अबोध बालक पलता है, माँ गुरु है, मार्गदर्शक है, माँ बच्चों की प्रथम शाला है, माँ आशा है, माँ बच्चों की अभिलाषा है। माँ के ऋण से कोई उऋण नहीं हो सकता है, माँ त्याग की मूर्ति है, माँ त्रिवेणी है, माँ गंगा है, माँ यमुना है, माँ ज्ञान की दीपशिखा है। माँ स्नेह का वात्सल्य है, माँ साहस की मूर्ति है, कलयुग में माँ बेटों से दुःखी है, उपेक्षा से कुण्ठित है, माँ वेदना में भी संवेदना समेटे हुई है, माँ हर परिस्थिति में मर्यादित है, दुःख की घड़ी से विचलित नहीं हुई है, संकटों में सामना करने वाली साहसी है, हम माँ के समर्पण के आगे नतमस्तक हैं।

मेरी माँ मेरी जिन्दगी है।

– कु. दीपिका बघेल, कक्षा–10 'ब

उन्होंने कहा था

1. जो हो गया, सो हो गया।
   What is done can't be undone.
   उत्तर – शेक्सपीयर।
2. प्रत्येक व्यक्ति एक किताब है, बशर्ते आप उसे पढ़ पायें।
   Every man is a volume, if you know how to read him.
   उत्तर–विलियम एलेरी चैनिंग।
3. विश्व जांच पड़ताल के सिवाय कुछ भी नहीं है।
   The world is but a school of inquiry.
   उत्तर–माइकल डे मांटेग्यू।
4. घृणा यद्यपि सुखद होती है पर प्रेम हितकर।
   It is easy to hate, but healthy to love.
   उत्तर– डॉ. एस. राधाकृष्णन।
5. धर्म लोगों के लिए अफीम का काम करता है।
   Religion is the opiate of marses.
   उत्तर– कार्ल मार्क्स।
6. अच्छे इंसान का जीवन–भर या जीवन के बाद किसी तरह का नुकसान नहीं होता।
   Nothing can harm a good man, either in life or after death.
   उत्तर– सुकरात।

– कु. शिवानी विश्वकर्मा
कक्षा–11 'गणित–2'

For our life

Life is challange	-	Accept it,
Life is struggle	-	Meet it,
Life is duty	-	Perform it,
Life is game	-	Play it,
Life is song	-	sing it,
Life is dream	-	Realise it,
Life is promise	-	Fulfil it,
Life is a love	-	Enjoy it,
Life is a liability	-	Workship it,
Life is a camera	-	Face it with smile.

- Sejal Jain (8th A)

नन्ही कूची

Vaishali Vyas, Class - VII (A)

Harsh Shrivastava, Class - IX (A)

Kanishk Richhariya
Class - VI (A)

Aryan Bhardwaj, Class - X (A)

Lakshita Rajput, Class - VIII (B)

श्रद्धांजलि

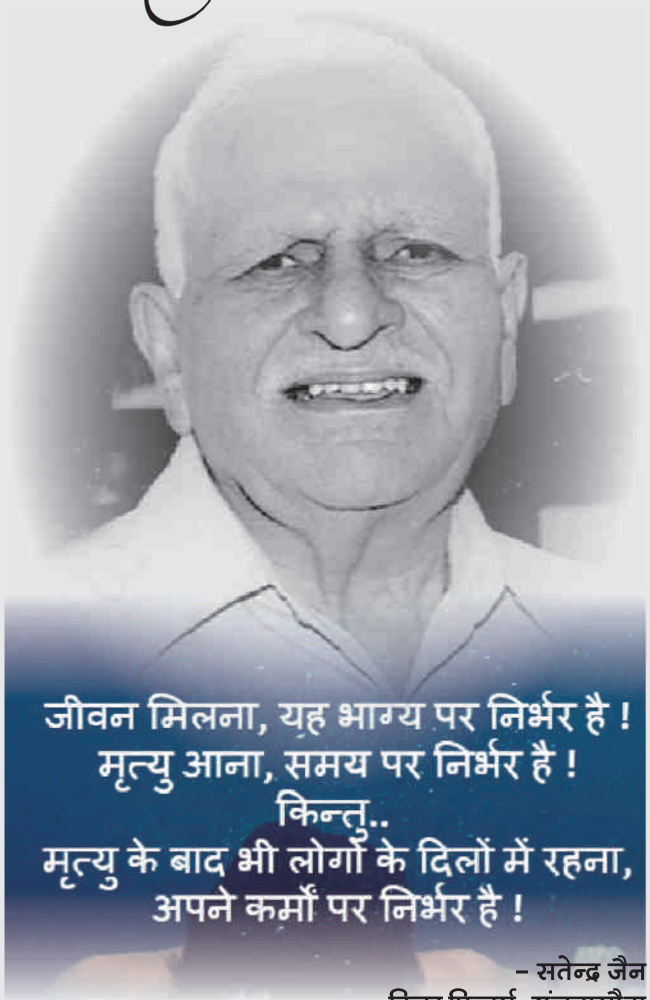

– सतेन्द्र जैन
किट्टू प्रिन्टर्स, गंजबासौदा

नवांकुर
रजत जयंती समारोह
1978 - 2003

DOLPHIN

गणतंत्र में "गण" बड़ा है.तंत्र
नवांकुर विद्यापीठ
गणतंत्र में "गण" बड़ा है.तंत्र
प्रवहणी चेतना
"वेतवा-यात्रा"
नवांकुर विद्यापीठ
गंजबासोदा (म.प्र.)
नवांकुर विद्यापीठ
गंजबासोदा (म.प्र.)
भारत जन ज्ञान-विज्ञान जत्था
"92"
पुरस्कार वितरण समारोह
एवं
कैरियर साहित्य वितरण समारोह
नवांकुर विद्यापीठ
राम श्याम